अर्ध शताधिक ग्रंथ कर्ता ,इन्दू)हिन्दू (धर्म प्रदाता,
संचलनात्मक रचयिता ,त्रैत सिद्धान्त आदि कर्ता

श्री श्री श्री आचार्य प्रबोधानन्द योगिश्वर जी

कर्म पत्र

Translation by
K.Ramani B.Com

Published by
Indhu Gnana Vedika
(Regd.No.168/2004)

IMP Note : To know the true and complete meaning of this Grandha (book) it must be read in Telugu Language.

कर्म पत्र

कर्म पत्र प्रत्यक्षत; से दृष्टि को गोचर नहीं होता है। कर्म मर्मरुपी है, जिसे कोई नहीं जान सकता। कर्म की बात सब करते हैं, सुनते हैं जब वह अमल में रहता है, तब कर्म इस प्रकार से है समझ में आता है। कार्य प्रत्यक्ष रुप में सबकी जानकारी में होता रहता है। कर्म एक अनभिज्ञ भाव, जो कार्य रुप में गोचर होता रहता है। और वही कर्म अनुभव में भी आता है। कानून सरकार का है, कानून पालन के रुप में ज्ञात पड़ता है। पालक जन पालन को प्रजा जनों पर अमल करते हैं, प्रजा उसे अनुभव करती है सब जानते हैं। उसी तरह से कार्य अर्थात् कानून, शरीर के राजा अर्थात् आत्मा का है। कर्म कार्य रुप में गोचर होता है। शरीर के अव्यव कार्य को अमल करते हैं, जीव उसे अनुभव करना ज्ञात होता रहता है। कुल मिलाकर सुख और दुख अनुभवों में आता है अनुभव कार्य से, कार्य कर्म से उत्पन्न होना सूचित हो रहा है।

सुख का अनुभव कुछ सेकेण्ड़ों, कुछ मिनटों तक ही होता है। उसके बाद सुख समाप्त हो जाता है। सुख समाप्त हो गया, इसका तात्पर्य उससे संबंधित कार्य भी समाप्त हो गया है। कार्य समाप्त हो गया, तो इसका तात्पर्य उससे संबंधित कर्म भी समाप्त हो गया है। सुख, उससे संबंधित कार्य मनुष्यों के जानकारी में समाप्त होता है, परन्तु उनसे संबंधित कर्म समाप्त हो जाने पर भी गोचर नहीं होता है। कर्म एक विश्वास मात्र है। उसका कार्य सत्य है। और उसका अनुभव प्रत्यक्ष है। ज्ञात हो रहा है कि कर्म के कारण कार्य होना, प्रति कार्य का मूल है कर्म। आगामी कार्य का कारण है कर्म, जो मनुष्य के मस्तिष्क में मौजुद होता है। कार्य समाप्त होते ही कर्म भी समाप्त हो जाता है। कार्य की प्रक्रिया चलते रहने से कर्म भी समाप्त होता जाता है। अगर समझ सकें तो कार्य के अनुसार कर्म नहीं, बल्कि कर्म के अनुसार कार्य सम्पन्न होता है स्मरण रखना चाहिए। आगामी कर्म को भविष्य कहते हैं। विगत कर्म को भूत कहते हैं। मौजुदा कर्म को वर्तमान कहा जाता है। इसे वर्तमान, भूत, भविष्य कहा जाता है। ये तीनों शब्द कर्म के स्थितियों के बारें में सूचित करते हैं। वर्तमान प्रस्तुत अनुभव होता हुआ, भूत गुजरा सत्य, तथा भविष्य न ही अनुभव में आया, और न ही सत्य है। भविष्य एक अनभिज्ञ अन्धकार है। उस अन्धकार- मय भविष्य को ज्ञान की ज्योति द्वारा जाना जा सकता है, हमारी रचनाएँ में से एक ज्योतिस शास्त्र नामक ग्रन्थ में बताया गया है।

inraithashakam-36

भविष्य को अन्धकार, कर्म को मर्म कह सकते हैं। मर्म अर्थात् अनजान रहस्यमयी रुप में मौजुद रहना। अन्धकारमय अर्थात् अन्धेरा ही अन्धेरा का तात्पर्य नेत्रों से अगोचर हुआ। बाह्य ज्ञानेन्द्रिय अर्थात् नेत्रों के लिए, अन्तरेन्द्रिय अर्थात् बुद्धि के लिए अविदित मौजुदगी ही कर्म है। कर्म किसके लिए मर्म होता है अगर प्रश्न उठे तो, जो कर्म को अनुभव कर रहा हो उनके लिए कर्म मर्म होता है कह सकते हैं। कर्म शब्द को नास्तिकवादियों, खुद को हेतुवादी कहनेवाले नास्तिकों, खुद को सत्यानिवेशी (सत्य का अन्वेशन करनेवाले) कहनेवाले नास्तिक सहमत नहीं होगें। कुछ समाज के लोग कर्म की बात पर विश्वास नहीं करते हैं। ऐसे लोग कर्म को केवल कल्पित कहकर, कर्म को ज्ञान से असंबंधित कहते हुए तर्क देते हैं, कर्म की बातें बतानेवाले योगियों, ज्ञानियों के बारें में अपमानजनक बातें करते हुए, दैवज्ञान(आत्मज्ञान) की अवहेलना कर रहे हैं। उस प्रकार के लोग कर्म के बारें में पुछ रहे प्रति प्रश्न का उत्तर हमने देने का विचार किया। इस कारण कर्मद्वेषियों, ज्ञानदूषण करने वालों के पास हम जाकर उनके प्रति प्रश्न का उत्तर देने का प्रयत्न कर रहे हैं। अप्रत्यक्ष अन्धेरा, अनभिज्ञ मर्म अर्थात् कर्म को, सबको सूचित करना हमारा कर्तव्य मानते हुए, नास्तिकों ने कई प्रश्नों को पुछा उन सब का उत्तर दिया गया। उन प्रश्नों तथा उत्तरों को नीचे लिख रहे हैं देखिए।

1) **प्रश्न** ;- भगवद् गीता में श्री कृष्ण जी ने कर्म कहा, बायबिल में यीशु ने पाप कहा, क़ुरआन में जिब्राईल ने कर्मपत्र कहा। क्या कर्म, पाप, तथा कर्मपत्र तीनों भिन्न-भिन्न भाव बताते हैं ?या सब एक ही भाव से संबंधित बातें हैं ?

उ ;- भगवद् गीता सृष्टादि में आकाशवाणी द्वारा सूर्य को बतलाया हुआ ज्ञान था। और उसी ज्ञान को पाँच हजार एक सौ इक्कावन(1151) वर्ष पूर्व श्री कृष्ण जी के भगवद् गीता में, 2013 वर्ष पूर्व ईसा के बायबिल में, 1400 वर्ष पूर्व जिब्राईल के क़ुरआन में कहा गया है। जिसने भी बतलाया हो वह सम्पूर्ण दैवज्ञान(आत्मज्ञान) ही है, विशेष रुप से सृष्टादि में सूर्य से कहा हुआ ज्ञान ही तीनों संदर्भों में बतलाने के कारण, कर्म कहें, पाप कहें, या कर्म पत्र कहें सब गीता में कहे हुए कर्म ही है, ज्ञात होना चाहिए। कर्म शब्द एक होते हुए भी, उनके भाषाएँ तथा भावों के आधार पर ही कहीं कर्म, कहीं पाप-पुण्य, कहीं कर्म-पत्र कहे जा रहे हैं। कई संदर्भों में नामों में परिवर्तन होने के बावजुद भी उद्देश्य में, गीता में श्री कृष्ण जी द्वारा कहे हुए भाव ही व्यक्त करता है, समझना चाहिए। कई मनुष्यों, या अन्य मत(धर्म) के लोग कर्म को समझने में गलत फहमी

के शिकार बनते जा रहे हैं। उनके दिमाग में जो भाव पहुँचता है उसी भाव पर ही वे ठहर जाते हैं। जिसे हम अवगाहना में कमीं कहते हैं। अवगाहना यथातथ्य न होने पर अर्थ बदल जाता है, और उनके भाव में भिन्न अर्थ ठहरता जाता है। परमात्मज्ञान को ज्ञात करने में हर एक व्यक्ति में भिन्न-भिन्न अभिप्राय आने का तात्पर्य है, मनुष्यों के अन्दर अवगाहना में कमीं ही कारण बन रहा है, कह सकते हैं।

2)**प्रश्न ;-** माना कि अवगाहना में कमीं कम होशियार लोगों में होती है। होशियार लोग, मेधावियों, ऊँचे पदों पर आसीन लोग, तथा अन्य कई लोग परमात्मा विषयों में पूर्ण रुप से विपरीत भाव प्रकट करते हुए परमात्मा नहीं है कहते रहते हैं। तथा वे लोग निन्दा करते हुए कहते हैं कि आलसी लोग ही परमात्मा, ज्ञान कहते हुए बिना काम-धाम किए व्यर्थ में समय गुजारते हैं, पर यहाँ तो सब लोग होशियार हैं फिर भी परमात्मा नहीं है कह रहे हैं ? कई जगहों में कुछ लोग परमात्मा वैसा नहीं ऐसा होते है, कहते रहते हैं। कुछ और लोगों का कहना हैं कि हमारे मत(धर्म) के अलावा अन्य मतों में न ही ज्ञान है, और न हीं परमात्मा है। इन सब लोगों में परमात्मा विषयों पर एकमत क्यों नहीं है। क्या आप इन लोगों में अवगाहना में कमीं कहेंगे ?

उ ;- अवगाहना में कमीं एक रोग की तरह होता है। किसी भी रोग के लिए यह व्यक्ति होशियार है, यह व्यक्ति कम होशियार है, देखे बिना होशिया, मेधावियों पर भी अपना गिरफ्त कस लेता है। विशेष रुप से परमात्मा विषय में अवगाहना में कमीं किसी में भी हो, वो चाहे कितना ही महान व्यक्ति क्यों न हो, गरीब ही क्यों न हो, अविवेकी ही क्यों न हो, विवेकवान ही क्यों न हो, पंड़ित ही क्यों न हो, तथा पामर में भी हो सकता है। कई स्थानों में ज्ञानियों में, अज्ञानियों में, कुछ और जगहों पर ज्ञान बोधन करनेवालों में भी अवगाहना में कमीं आ सकती है। मुख्य रुप से ध्यान देनेवाला विषय यह है कि अवगाहना में कमीं सभी विषयों में, सभी संदर्भो में नहीं होता है, बल्कि कुछ ही विषयों में, कुछ ही संदर्भो में मात्र ही होता है। किसी विषय को सौ लोग एकसाथ सुनते हो तो, सब लोगों को एक ही भाव समझ न आने का कारण, सुना हुआ विषय पर लोगों में भिन्न-भिन्न अभिप्राय बनना। सौ लोगों में किसका अभिप्राय यथातथ्य है, किसे यथातथ्य समझ में आया है, वहाँ सौ लोगों को बोधन करनेवाला व्यक्ति को ही मालूम हो सकता है, अन्य किसी को मालूम होने की गुंजाइश नहीं होती है। बोधन करनेवाले ने किस अभिप्राय से कहा है, सुनने वाले ने किस अभिप्राय से समझा है, बोधक को मात्र ही जानकारी होगी कि किसमें अवगाहना में कमीं आयी है। क्योंकि

jnanashakam-36

क्या कहा गया है, कहनेवाला ही जानता है। इसलिए सुनने वाले में भाव सही है या नहीं, बतानेवाला मात्र ही जान सकता है, यही सूत्र है।

3) **प्रश्न ;–** मुझे नहीं पता इसलिए पुछ रहा हूँ कि अवगाहना का तात्पर्य क्या है ?

उ ;– बतानेवाले ने जिस उद्देश्य से बताया, उसी उद्देश्य से यथातथ्य ग्रहण करना अवगाहना कहा जाता है। सम कहें, समान कहें दोनों एक ही अर्थ देते हैं। दोनों ओर समान भाव होता हो तो सम-समान या एक जैसा भी कहा जाता है। एक ओर के भाव सम से दूसरे ओर के भाव से तुलना कर देखने पर यदि दोनों में समानता हो तो, सम-समान या एक जैसा शब्द का उपयोग किया जाता है। जब कभी भी बतानेवाले व्यक्ति में, सुननेवाले व्यक्ति में अन्तर आ जाए उसे सम-समान या एक जैसा नहीं कहा जाएगा। और विस्तार से बातें करते हैं मान लिया जाए कि प्रथम बतानेवाला व्यक्ति एक विषय में अपने भाव में अपने जानकारी को जानकारी के अनुसार शत–प्रतिशत बोधन कर रहा है। सम्पूर्ण बोधन बातों के रुप में, या लिखित रुप में होता है। एक व्यक्ति अपनी जानकारी को जानकारीनुसार बताना, तथा हू-ब-हू लिखने को शत-प्रतिशत प्रकट करना कहते हैं। अपनी जानकारी को जिस रुप में भी व्यक्त करें, उसे शत-प्रतिशत कह सकते हैं। बातों के रुप में बताया हुआ विषय हो, या लिखित रुप में लिखा हुआ विषय हो, सुननेवाले, या पढ़नेवाले ने कितने प्रतिशत ग्रहण किया यह उनके अवगाहना पर निर्भर करता है। कोई भी विषय हो, शत-प्रतिशत ग्रहण करनेवाले लोग बहुत ही विरल होते हैं। विषय को सुनकर, पढकर कोई भी व्यक्ति शत-प्रतिशत ग्रहण नहीं कर सकता है। अपनी-अपनी ग्रहणशक्ति के अनुसार कुछलोग 90 प्रतिशत, कुछलोग 80 प्रतिशत, कुछलोग 70 प्रतिशत, इत्यादि स्तरों में ग्रहण करते रहते हैं। 99 प्रतिशत से लेकर 9 प्रतिशत तक ग्रहण करनेवाले लोग भी होते हैं इसमें कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है। हमने पहले भी बताया था कि शत-प्रतिशत ग्रहण करनेवाले लोग बहुत ही विरल होते हैं। कुछ एक विषयों में किसी व्यक्ति के लिए भी सही तरीके से ग्रहण करना मुमकीन नहीं हो पाता है। कई बातें द्वंद (दोहरे)अर्थों में होता है। इस बारें में हम तेलुगु के कुछ शब्दों को लेकर बातें करेंगे। उदाहरण के लिए तेलुगु में चित्रम, चेप्पु, कल्लु ये शब्द द्वंद अर्थ देते हैं। चित्रम का अर्थ सिनेमा, तथा विचित्र, चेप्पु का अर्थ चप्पल, तथा बोलो, कल्लु का अर्थ पत्थर तथा आँखें। ये तीनो शब्द

दोहरे अर्थों को सूचित करने के कारण, इन्हें पढ़ते समय संदर्भानुसार समझना पड़ता है। अन्यथा पूर्णतः भिन्न अर्थ ही समझ मे आता जाएगा।

गाँव से आया हुआ व्यक्ति को देखकर अच्छे हैं न कैसे आए? अगर ऐसा पुछा जाय तो, वह व्यक्ति शायद मैंने प्रयाण किए वाहन के बारें में पुछ रहे हैं सोचकर, ट्रेन मिस हो गया था इसलिए बस से आया हूँ कहेगा, और तब पुछनेवाले व्यक्ति ने नहीं जी, आप किस काम से आए हैं पुछ रहा हूँ यदि ऐसा कहा तो, कोई भी व्यक्ति आसानी से समझ सकता है कि प्रथम पुछा हुआ प्रश्न अलग था, उनका बताया हुआ जवाब अलग था। ठीक वैसे ही चित्रम(विचित्र, सिनेमा) कहना आश्चर्य या सिनेमा समझ सकते हैं। चेप्पु(बोलो, चप्पल) कहने पर पैरों में पहननेवाला चप्पल या समाधान माँग रहा है सोच सकते हैं। उसी तरह से कल्लु (आँखें, पत्थर) कहने पर आँखें या पत्थर भी समझ सकते हैं। इस तरह से अनेक संदर्भों में तुरन्त गलती की पहचान कर सकते हैं, परन्तु लिखा हुआ विषय में गलती को पहचानना शीघ्रता से नहीं कर सकते हैं। अब उदाहरण के लिए एक वाक्य को लेते हैं। "उस समय में कल्लु(आँखें, पत्थर) नहीं दिखा हाथ में मिला डंडे से मारा" इस वाक्य को देखकर लगेगा कि "उस समय में अंधा होने के कारण शायद हाथ में लगी छड़ी को उठा लिया होगा" । हलांकि वहाँ पर उनका उद्देश्य कल्लु(पत्थर) था। पत्थर न मिलने की वजह से हाथ में मिले डंडे से मारा। इससे पता चलता है कि ऐसे कई संदर्भ होते हैं जिसे हम सही-सही समझ नहीं पाते हैं। किसी एक विषय को ग्रहण करने में बुद्धि की शक्ति को ग्रहणशक्ति या अवगाहना शक्ति या अवगाहना भी कहा जाता है।

4)**प्रश्न ;-** कुछ लोग किसी ग्रन्थ को एकबार पढ़ने मात्र से ही उस ग्रन्थ में कौन-सा विषय किस पन्ने में लिखा हुआ है, बता सकते हैं। उसी तरह किस अध्याय में कौन सा श्लोक लिखा हुआ है, बता सकते हैं। कोई भी श्लोक हो एकबार पढने मात्र से ही एक अक्षर भी चुके बिना कभी भी बोल सकते हैं। किसी भी विषय को सुनकर, पढकर, सम्पूर्ण रुप से ग्रहण करनेवाले व्यक्तियों को एकसंताग्रहियों(मेधावियों) कहा जाता है। एकसंताग्रही(मेधावी) अर्थात् एकबार सुनते ही, पढते ही ग्रहणकर अपने में छुपा लेनेवाला व्यक्ति। ऐसे लोग अनेकों हैं। इस प्रकार के सारे लोग जो वे पढते, सुनते हैं उसे शत-प्रतिशत ग्रहण करना ही कहलाएगा न!

उ ;– केवल एक बार पढने से, सुनने से, ग्रहण करनेवाले लोग होना स्वभाविक है। यह उनकी प्रतिभा होते हुए भी, उसे स्थूलग्रहिता(स्थूल ग्रहण करना) कह सकते हैं, सूक्ष्मग्रहिता नहीं। पढ़ाई पढ़कर, भाषा को सुनकर उसे स्थूल रुप में ग्रहणकर अपने स्मरण में बैठा कर वापस बतानेवाले लोग होना वास्तव ही है। एक बार सुनते ही या देखते ही वापस बताने वाले लोग हो सकते हैं। उतने मात्र से ही उन्हें ग्रहीताशक्ति वाले लोग मान लेना गलतफहमी होगी क्योंकि! उनके पास स्मरणशक्ति होती है, ज्ञानशक्ति नहीं सूचित हो रहा है। किसी विषय को सुनकर, पढकर वापस उसे शत-प्रतिशत हू-ब-हू ज्यों का त्यों बता पाना, उसे यथातथ्य ग्रहीताशक्ति नहीं कह सकते हैं। स्थूल रुपी विषयों को हू-ब-हू शत-प्रतिशत कहने पर भी, सूक्ष्म रुपी विषयों में भाव से सम-समान जरा भी नहीं समझना चाहिए। वैसे लोग भाषा पर निर्भर होते हैं, भाव पर निर्भर नहीं होते हैं। किसी भी विषय में भाषा नहीं भाव मुख्य होता है। भाव रहित भाषा या विद्या जितना भी प्रदर्शित करें वह अलंकारदायक ही होता है, आनन्ददायक नहीं। भाव रहित अवगाहना प्राण रहित शरीर की तरह होता है। साधारणतया प्रपंच विषयों में गलतफहमी में पड़नेवाले लोग परमार्थ ज्ञान के विषयों में पूर्ण रुप से गलतफहमी में पड़ने की संभावना रहती है। इस कारण जितने भी ग्रहीता शक्ति वाले लोग होते हैं वे परमार्थ ज्ञान में सूक्ष्मता को समझ नहीं पाते हैं, इस बात से अनजान होते हैं कि उन्होंने नहीं समझा, फिर भी मान बैठते हैं कि उनकी समझ में सब कुछ आ चुका है।

5)**प्रश्न ;–** कर्म का विषय ब्रम्हविद्या शास्त्र में मुख्य समाचार होने के कारण, ग्रन्थ में लिखा हुआ ज्ञान को रटकर बतानेवाले लोगों को भी कर्म के अन्दर की सूक्ष्मता यथातथ्य समझ में नहीं आया क्या कह सकते हैं ?

उ ;– परमात्म शास्त्र को बड़ी विद्याशास्त्र कहते हैं। सबसे पहले पैदा होते हुए भी, सबसे आखिर में रहा परमात्म शास्त्र। जिसे ब्रम्हविद्या(बड़ी विद्या) शास्त्र कहा गया है। ईश्वर अव्यक्त सूक्ष्म रुपी है। समस्त परमात्म ज्ञान भी सूक्ष्म भाव से युक्त होता है। स्थूलरुपी श्लोक हो, या गाना हो, या दोहे हो, या गद्य में हो, सूक्ष्मता को ग्रहण न कर पानेवाले लोग परमात्म ज्ञान में सत्यता को नहीं जान सकते हैं। परमार्थ ज्ञान में कर्म ने मुख्य स्थान ले रखा है। कर्म परमार्थ ज्ञान का भाग होने के कारण, कर्म सूक्ष्म में रहकर, हर किसी के लिए अनजान बन कर रह गया है। सूक्ष्मता से युक्त कर्म को स्थूल रुप से याददाश्त शक्तिवाले लोग नहीं जान सकते हैं। कर्म को जानने के लिए सूक्ष्मग्रहीता शक्ति की आवश्यकता होती है। याददाश्त शक्ति का संबंध मनोबल से होता है। मनोबल माया के जैसे होता है। मैं अच्छे से जानता हूँ घमंड़ उत्पन्न होने के

thrathashakam.org

कारण, उनके याददाश्त शक्ति अन्य लोगों में न होने की भावना, गुणों से घमंड़ का संबंध होने के कारण, याददाश्त शक्ति भी माया को बल देते रहता है। इस कारण दैव संबंन्धित कर्म को ग्रहण करने के लिए सूक्ष्म दृष्टि नहीं रह पाता है। कितना भी याददाश्त शक्तिवाला व्यक्ति क्यों न हो सूक्ष्म युक्त दैवज्ञान उसकी अवगाहना में आ पाएगा, कहना कठिन है।

6) **प्रश्न ;–** आपने कहा था कि जिन व्यक्तियों में स्मरणशक्ति होती है उन्हें न ही सूक्ष्म विषय समझ में आते हैं, और न ही अवगाहना करने की संभावना होती है। अगर जो लोग सूक्ष्म को ग्रहण करते हैं, उन लोगों में स्मरणशक्ति ही न रहे तो, वे ग्रहण करके क्या प्रयोजन है। क्योंकि वे किसी को भी बोध करने में असमर्थ रहेंगे न !

उ ;– स्मरणशक्तिवाला व्यक्ति कोई भी श्लोक हो, वह जो भी पढ़ा हो सरलता से कह पाता है। वह व्यक्ति सब लोगों की नजर में प्रतिभाशाली होता है, परन्तु उन्हें ज्ञान की सूक्ष्मता ज्ञात नहीं हो पाता है। ज्ञान की सूक्ष्मता को ग्रहण करनेवाला व्यक्ति में स्मरणशक्ति न होने पर भी, उन के अन्दर ज्ञान की शक्ति होती है। इसलिए वह व्यक्ति ज्ञान के मुख्य भाव को बोल पाता है, किन्तु याद रखनेवाले व्यक्ति की तरह श्लोकों, दोहें, उनके पेज नम्बरों को नहीं कह पाता है। सूक्ष्म रुप में विद्यमान ज्ञान को विवरण कर समझा सकता है। उसे बताने के लिए स्मरणशक्ति की अवश्यकता नहीं है। मनुष्य के शरीर में आत्मा ही श्लोकों को, दोहों को पेज नम्बरों को न कहलवाकर, स्वच्छ ज्ञान को मात्र ही समझाते हुए बोध करती है। जिन लोगों में स्मरणशक्ति होती है उनका मन दृढ़ होकर, ग्रन्थ के अन्दर विषयों को ज्यों का त्यों बिना गलती कहलवाती है। हलांकि ज्ञानी वैसा कह नहीं पाते हैं। उस प्रकार की स्मरण शक्ति उनमें नहीं होता है। और वे श्लोकों, दोहें वाक्यों को नहीं बता सकते हैं। जिन लोगों में स्मरण शक्ति होती है उनका मन बलवान होता है और हू-ब-हू वाक्यों को कहता है, ज्ञानियों में आत्मा ताकतवर होती है वाक्यों को, श्लोकों को न कहलवाकर, उनके अन्दर मूल ज्ञान को मात्र ही कहलवाती है। इसलिए ज्ञानियों में स्मरण शक्ति हो या न हो कोई बात परवाह नहीं है

7) **प्रश्न ;–** आपने कहा था कि कर्म मर्म में रहता है, उसे कोई नहीं जान सकता, कर्म एक विश्वास मात्र है। जिस विषय के बारें में कोई न जानता हो उसे आप कैसे कह पा रहे है? जिस विषय पर आपको विश्वास किया, हम उस पर कैसे विश्वास करें ?

उ) ;– कर्म एक विश्वास है, जब भी वह अमल में आता है प्रत्यक्ष रुप में पीड़ा महसूस करना, या सुख अनुभव करते हैं। इसलिए कर्म सत्य है सूचित हो रहा है। जब वह अनुभव में आता हो जिसकी पीड़ा उसी को महसूस होता है। इसलिए जिसका कर्म उसी को समझ में आता है, इससे ज्यादा निरुपण की आवश्यकता नहीं है। आज मैं तुमसे कर्म के बारें में विशेष रुप से नहीं कह रहा। परमात्मा ने सृष्टि के आदि में ही कर्म के बारें में सम्पूर्ण रुप से कहा था। इस कारण कर्म के बारें में हम सब को विश्वास करना ही पड़ेगा। कोई विश्वास करे या न करे उसे उसका कर्म को भोगना अनिवार्य है। यहाँ पर कुछ तेरुगु शब्दों का प्रयोग कर रहें हैं जिससे विषय को समझाने में सरल हो सकें। कर्म को भोगते समय में न चाहते हुए भी यह सब मेरा ही कर्म है मनुष्य के मुख से निकलता है। अनुभव में आने के बावजुद भी कर्म के तात्पर्य से अनजान व्यक्ति, (**तेलुगु में मस्तक को तला कहते है**) बिना (**तलकाय**) मस्तक वाले व्यक्ति के समान है। कोई भी पुछ सकता है मस्तक(**तला**) तो सब का होता है, आप तला के बदले **तलकाय** क्यों कह रहे हैं, तेलुगु में **कच्चा फल को काय कहा जाता है**। कर्मफल सिर के अन्दर में होता है, इसलिए उसे **तलकाय** अर्थात् मस्तक में कच्चा फल कहा जाता है।

8) **प्रश्न ;–** आप बड़ी ही होशियारी से तला(सिर) नामक शब्द से काय नामक शब्द जोड़ रहे हैं। आपके कहने के अनुसार माना जाय तो काय(कच्चा फल) तो कच्चा होता है, जिसे खाया नहीं जा सकता, इसका मतलब रुचि अनुभव में नहीं आता है। कर्म को काय(कच्चा फल) माना जाय तो, कर्म अनुभव में कैसे आ सकता है? जो अनुभव में आता हो उसे फल कहना चाहिए काय(कच्चा फल) कैसे कह सकते हैं? इसलिए कर्म को कर्मफल कहना ही उचित होगा। तलकाय के बजाय तलफलमू(मस्तक में फल) कह सकते हैं। तलकाय(मस्तक में कच्चा फल) कहना गलत हो सकता है न ! आपका क्या कहना है? आप किस प्रकार से समाधान देंगे?

उ ;– तला(मस्तक) को कुछ संदर्भों में मात्र ही मस्तक में फल अर्थात् **तलापंडु** कहा जाता है। **पंडु** अर्थात् फल कुछ लोगों के मुताबिक यह शब्द आर्शीवाद, तथा कुछलोगों के मुताबिक दूषण होता है। जैसे;- लोग क्रोध में आकर तेरा मस्तक टुकड़े-टुकड़े हो जाए कहते रहते हैं। यह वाक्य ज्ञान के अनुसार आर्शीवाद होता है, अज्ञान के अनुसार गाली, दूषण होता है। जो भी हो कुछ ही संदर्भों में तलफलमू(सिर का फल) कहा जाता है, अन्य संदर्भों में तलकाय(सिर का फल) ही कहा जाएगा।

thraithashakam-36

9) **प्रश्न :-** कर्म अनुभव में आता है, इसलिए उसे उद्देश्य में रख कर सिर को तलापंडु अर्थात् सिर का फल कहना चाहिए था, तो फिर तलकाय मस्तक का कच्चा फल) क्यों कहा गया?

उ :- जब तेरा जन्म हुआ तब तुम शिशु थे। कुछ दिनों के बाद तुझे बालक पुकारा गया। उसके बाद अभी तुझे मनुष्य कहा जा रहा है। तुने मनुष्य का जन्म लिया फिर भी, तुझे मनुष्य न कहकर शिशु पुकारा गया। थोड़ा बड़ा होने के बाद भी तुम मनुष्य ही थे, फिर भी तुझे मनुष्य न कहकर बालक पुकारा गया। पूरा बालपन समाप्त होने के बाद अब तुझे मनुष्य कह रहे हैं। तेरे पैदा होने से लेकर बड़े होने तक, तुम मनुष्य होते हुए भी, जिस प्रकार से शिशु, बालक, मनुष्य तीन दशाएँ होती हैं वैसे ही कर्म को एक समय में पिंजे(छोटे कच्चे फल), फिर काय(कच्चा फल), उसके बाद पंडु(फल) कहा जाता है। संदर्भों के अनुसार जैसा बुलाना चाहिए वैसा ही बुलाया जा रहा है। मनुष्य के उम्र के अनुसार शिशु, बालक, मनुष्य कहने के अनुसार ही, कर्म भी पक्व के अनुसार छोटे कच्चे फल, कच्चा फल, फिर पका फल कहते हैं। इसका विवरण इस प्रकार से है सुनो। कर्म अप्रत्यक्ष भाव है फिर भी उसका मनुष्य के जैसा ही शिशु दशा, बाल्य दशा, यौवन दशा होते हैं। मनुष्य को पैदा होते उसे शिशु कहा गया वैसे ही कर्म को पैदा होते ही आगामी कहा जाता है। बाल्य दशा में मनुष्य को बालक कहने के जैसा ही कर्म को संचित कहते हैं। बालपन के बाद मनुष्य यौवन, कौमार्य, वृद्धावस्था में मनुष्य कहलाता हैं वैसे ही संचित के बाद कर्म को प्रारब्ध कहते हैं। इन सब पर गौर करें तो कर्म के तीन दशाएँ होती हैं, कुछ संदर्भों में कर्म को छोटे कच्चे फल(आगामी), कुछ संदर्भों में कच्चा फल (संचित) तथा कुछ संदर्भों में कर्म को फल(प्रारब्ध)बुलाना चाहिए। जिस प्रकार से मनुष्य को शिशु दशा में बालक, बालक दशा में शिशु नहीं बुलाया जाता उसी तरह से कर्म को आगामी, संचित, प्रारब्ध में पहचानकर कब क्या कहना हो वैसे ही कहना चाहिए।

10) **प्रश्न :-** हमने जाना कि कर्म तीन प्रकार के होते हैं। मनुष्य के शिशु, बाल्य दशाओं में एक पोषक या संरक्षक रहता है जो दायित्व निर्वाह करते हुए शिशु, बाल्यावस्था में शिशु मनुष्य में बदलने तक उसकी रक्षा करता रहता है। उसी तरह आगामी, संचित, प्रारब्ध कर्मों का क्या कोई रक्षक, या पोषक होता है?

उ :- प्रत्यक्ष शिशु के लिए प्रत्यक्ष माता ही रक्षक बनकर पालन-पोषण करती रहती है। बाल्य दशा में भी अधिक देख-भाल माता ही करती है, इसमें पिता का कुछ दायित्व होता है। उसी तरह अप्रत्यक्ष कर्म का पोषण माता की भाँति अप्रत्यक्ष आत्मा करती रहती है। आगामी कर्म का रक्षण आत्मा ही करती है। आगामी कर्म,

संचित कर्म में परिवर्तन होते समय में संचित कर्म को अपने रक्षण में रखती है। शिशु कुछ समय के बाद बालक में बदलता है, बालक के रुप में कुछ समय तक रहता है, उसके बाद मनुष्य में बदलकर समाज में एक व्यक्ति के रुप में उसकी पहचान बनती है। आगामी कर्म 69 वर्ष 5 महीनें 10 दिनों में संचित कर्म में बदलकर आत्मा के रक्षण में रहता है। कर्म, आगामी में हो, संचित में हो आत्मा के रक्षण में रहनेवाला कर्म को कोई नहीं जानता है। कर्मचक्र के अन्दर आगामी, संचित कर्म दोनों में होते हुए भी, उससे सब अनजान हैं। बालक, मनुष्य में बदलकर व्यक्ति के रुप में समाज में पहचान बनाने के भाँति ही संचित कर्म, प्रारब्ध में बदलता है, तब कर्मचक्र में ज्योतिसियों द्वारा पहचाना जाता है। ज्योति को जाननेवाला ज्योतिसी कहलाता है। ज्योति अर्थात् रोशनी देनेवाला ज्ञान समझना चाहिए। ज्योतिसी अर्थात् ज्ञानी। जो ज्ञानी होता हो कर्म को जानता है। कर्मचक्र में प्रारब्ध कर्म को ज्योतिसी देख सकता है। मनुष्य व्यक्ति के रुप में समाज में पहचानने की भाँति ही प्रारब्ध कर्म के रुप में बदला कर्म, कर्मचक्र में ज्ञानियों द्वारा पहचाना जाता है। कर्म जब तीन प्रकार से रहता है, रक्षक और पोषक आत्मा ही होता है। कर्म, आगामी, संचित में रहते समय में किसी को मालूम न पड़ सके आत्मा पहले से ही कर्मचक्र में छिपाकर रखता है, वही कर्म प्रारब्ध में आने के बाद कर्मचक्र में ज्ञानियों के नजर में लाता है।

11) **प्रश्न ;–** कई लोग कर्म को मस्तक में लिखित(लिखा हुआ) कहते हैं। आखिर कर्म को लिखित क्यों कहा जाता है ?

उ) ;– कर्म एक लिखित पेपर की भाँति होता है। लिखित पेपर पर कुछ समाचार रहता है। कर्म कितना होगा उसकी कोई सीमा नहीं होती है। इस कारण एक कर्म एक कागज पर लिखित हो तो, तात्पर्य अनेक कर्मों को लिखित होने के लिए अनेक पेपरों की आवश्यकता होगी। ऐसे अनेकों कर्मों को अनेकों पेपरों में लिखित होने के कारण उसे एक ग्रंथ के जैसा कह सकते हैं। 130 वर्ष पूर्व न पेपर हुआ करते थें, न ही छपाई मशीनें हुआ करती थीं। उन दिनों पेपर न होने के कारण ताड़ के पत्तों पर लिखा जाता था। त्रेतायुग में आदि कवि वाल्मिकी जी से लेकर 350 वर्षों पूर्व वीर ब्रम्हम जी तक, रामायण तथा काल-ज्ञान को ताड़ के पत्तों पर ही लिखा गया था। उन दिनों हल्दी और तेल से ताड़ के पत्तों पर लेप लगाकर उस पर लिखने के कारण, अनेक दिनों तक ताड़ के पत्तें शिथिल नहीं होते थें। पत्ता को पत्र, तथा ताड़ के पत्तों को ताड़-पत्र कहा जाता था। पूर्व पत्तों पर लिखन लिखा करते थे, आज उसी का अनुसरण करते हुए विवाह के विषयों को

कागज पर लिखा जा रहा है जिसे हम लग्न-पत्रिका कहते हैं। अन्य विषयों में भी पत्र कहना, और लिखते रहते हैं। आज भी कभी-कभी लिखन समयों में पत्र नाम उपयोग हो रहा है। उसी तरह हम सब के शरीर के अन्दर कर्म-पत्र मौजुद है, कहा गया। हम सब ने विचार किया था न कर्म लिखित ग्रन्थ की भाँति होता है, ग्रन्थ के जैसा कर्म मस्तक के अन्दर कर्मचक्र में होने के कारण, कर्म को मस्तक में लिखा हुआ कहा जाता रहा है। जिसका कर्म-पत्र उसी के मस्तक के अन्दर मौजुद होता है, कहा जाता रहा है। कर्म रहित होकर मोक्ष की प्राप्ति हो इस भावना से बड़े-बुजुर्ग तेरा पत्ता फट जाय कहा करते थे। पत्ता फट जाने से कर्म लिखित नहीं रहेगा, इस भावना से तेरा पत्ता फट जाए कहा करते थे। लिखने के लिए पत्र होना चाहिए, कर्म लिखित को कर्म-पत्र कहा गया है। कर्म-पत्र हर किसी के उसके मस्तक में होने के कारण, उसे मस्तक में लिखा हुआ या मस्तक पर लिखा हुआ कहते रहते हैं। कोई भी ज्ञान रहित साधारण मनुष्य भी जब वह दुखी होता हो तो सब मेरा कर्म है अपने सिर की ओर इशारा करते हुए कहता है। कुछ न जानते हुए भी अपने हाथ को सिर की ओर इशारा करना कितना अजीब बात है न ! कुछ और अज्ञानी लोग भी कष्ट समयों में, यह सब मेरा मस्तक में लिखा हुआ है कहते हुए सिर पीट लेते हैं। कई लोग सिर पकड़ कर बैठ जाते हैं। वे लोग कर्म के बारें में न जानते हुए भी यह सब मेरा कर्म है अपने सिर को दिखाने के पीछे, आत्मा ही करवा रही है समझ सकते हैं। इस तरह दिखलाने के पीछे कारण, कर्म मस्तक के अन्दर मौजुद है जैसेकि आत्मा सभी को सूचित कर रही हो। इन सब बातों को ध्यान में रखकर ज्ञानियों ने कर्म को मस्तक पर लिखन या लिखा हुआ कहा।

12) **प्रश्न ;-** आपने कहा था कि कर्म अनेक विषयों से जुड़ा हुआ है, अनेकों विषयों से जुड़ा हुआ होने के कारण उसे अनेक पत्रों का समुदाय, एक ग्रन्थ के जैसा होता है। क्या आपने हमें कर्म के बारें में बतलाने के लिए, तथा समझ में आने के लिए इसे लिखित ग्रन्थ कहा ? या कहीं भी देवदूतों ने किसी मूल ग्रन्थों में इसका वर्णन किया है ? क्या इसमें कोई शास्त्रबद्धता है ?

उ ;- हमारे कहे हुए सारे ज्ञान के विषयों में शास्त्रबद्धता होती हैं। अशास्त्रीय विषयों के बारें में हम प्रस्ताव नहीं करते हैं। सृष्टि के आदि में आकाशवाणी द्वारा बताया हुआ ज्ञान को खगोल में मौजुद सूर्य ग्रह ने सुनकर धरतीवासी अर्थात् मनुष्यों को सूचित किया, कुछ समय के बाद वह ज्ञान अधर्मों में बदल गया, द्वापरयुग के अंत में परमात्मा ने अपने दूत श्री कृष्ण जी द्वारा, तथा ईसा द्वारा दो बार धरती पर कहलवाया।

सूर्य ग्रह मनुष्यों को बतलाने की भाँति ही, परमात्म ज्ञान को जिब्राइल ग्रह ने 1400 वर्षों पूर्व मोहम्मद प्रवक्ता को बतलाया। देवदूत रुपी श्री कृष्ण जी ने भगवद् गीता में, ईसा ने बायबिल में, जिब्राईल ग्रह ने क़ुरआन में कर्म को लिखित हो चुका कहा। श्री कृष्ण जी ने भगवद् गीता में अक्षर परब्रम्ह योग, पहला श्लोक में "किं कर्म पुरुषोत्तम;" (कर्म का तात्पर्य क्या है कृष्ण) अर्जुन ने पुछा। और तब कृष्ण ने इसका उत्तर तीसरे श्लोक में देते हुए कहा "विसर्ग; कर्म संज्ञित;" कहा। इसका अर्थ यह है कि कर्म संज्ञित; अर्थात् कर्म समूह में है। विसर्ग; अर्थात् सूक्ष्म से सूक्ष्म रुप में विभाजित किया हुआ। पूर्ण अर्थ में हर छोटा सा छोटा विषय भी लिखित हो चुका ग्रन्थ है। कर्म संज्ञित; अर्थात् कर्म समूह रुपी ग्रन्थ कह सकते हैं। अर्जुन ने कृष्ण से प्रश्न किया कर्म का तात्पर्य क्या है ? कृष्ण ने कर्म का तात्पर्य सूक्ष्म से सूक्ष्म रुप में अलग कर लिखित कार्यों का कारण कर्म होता है, कहा। बायबिल ग्रन्थ में लूका सूसमाचार 12 वाँ अध्याय 7 वाँ वाक्य में "तुम्हारे सिर के बाल भी गिने हुए हैं" कहा गया। मानव शरीर में कई मुख्य अव्यव होते हैं। मुख्य अव्यवों को छोड़कर निरुपयोग सिर के बालों के बारें में वे भी गिने हुए हैं, कहा इसका तात्पर्य है कि हर मुख्य बातों को बिना छोड़े अंकित किया गया है। मानव के लिए किसी भी प्रकार से उपयोग में न आनेवाले बालों को भी गिना गया है, इसका मतलब है कि हमारे जीवन से संबंधित प्रत्येक विषय पहले ही गणना कर लिखित हो चुका है, समझ सकते हैं। बाल भी गिने हुए हैं इस बात पर "शरीर को मारने के बाद कुछ भी न करनेवालों से डरो मत, मरने के बाद नरकाग्नि में डालने वाले से डरो" कहा गया। इसका अर्थ मनुष्यों को डरना नहीं चाहिए कर्म से डरना चाहिए कर्म के अनुसार ही सब कुछ होता है कर्म के अनुसार ही तेरे सिर में मौजुद, एक बाल उखड़ने के लिए भी कारण कर्म ही होता है समझाने के लिए कहते हुए, तेरे सिर के बाल भी गिने हुए हैं कहा। इससे समझ सकते हैं कि तेरे पूरे जीवन की हर बात लिखित कर्मानुसार ही होता है। एक जीवन के लिए पर्याप्त कर्म बहुत होता है। इसलिए कर्म को लिखित ग्रन्थ कहा गया है।

महाज्ञानी जिब्राईल ने क़ुरआन ग्रन्थ में 18 वाँ सूरा 49 वाँ आयत में "कर्म-पत्र उन्ही के पास रखा जाएगा, कहा। मुजरिमों उन पत्रों में लिखे को देखकर(कर्म को देखकर) डरना तुम देखोगे। और तब वे हाय हमारा दुंभाग्य, यह क्या ग्रन्थ है, कोई छोटा विषय(गुनाह) हो, बड़ा विषय हो, बिना लिखे नहीं छोड़ा गया" कहेंगे। और अपना सब किया उन्होंने सामने पाया और तुम्हारा रब किसी पर जुल्म नहीं करता। इससे पता चलता है कि किसी के साथ भी, अन्याय से कर्म लिखित नहीं होगा, खुद की करनी ही लिखा जाएगा। रब

किसी का भी कर्म घटाना, बढाना नहीं करता जिसने जैसा किया उसे वैसा ही लिखावाया जाता है। इस विषय में 53 वाँ सूरा, 39, 40, 41 वाक्यों में इस प्रकार से है। "39) हर मनुष्य अपनी कोशिश का फल के अलावा दूसरा नहीं पाएगा। 40) निश्चित ही उसकी कोशिश शीघ्र ही देखी जाएगी। 41) फिर उसका भरपूर फल दिया जाएगा। इन तीनों वाक्यों से पता चलता है कि जिसने जैसा कर्म किया हो, कार्य रुप में उसने वैसा पाया। कर्म, ग्रन्थ रुप में मौजुद है, उसमें हर छोटा विषय भी बिना छोड़े लिखा गया", ज्ञात होता है। इस विषय को कर्म संगम(कर्म ग्रन्थ) विसर्ग रुप में(बहुत छोटा) विभाजित कर लिखा हुआ मौजुद भगवद् गीता में कहा गया। इस कारण तीन मूल ग्रन्थों में कर्म को विस्तार से बताते हुए गीता में कर्म संगम कहा गया, कर्म करो दूसरे जगह, किसी छोटे से विषय को(पाप को) बिना छोड़े लिखकर रखा हुआ ग्रन्थ कुरआन ग्रन्थ में कहे अनुसार कर्म का समूह हमारे मस्तक में किस प्रकार से होता है समझ सकते हैं।

13) **प्रश्न ;–** आपने कर्म के बारें में जानकारी दी। क्या सब लोग कर्म की जानकारी कर सकते हैं।

उ ;– इस तरह से सब लोगों के लिए मुमकीन नहीं हैं। कर्म अत्यन्त सूक्ष्म भाव से युक्त होता है। बड़े-बड़े ज्ञानियों को मात्र ही कर्म का विधान समझ में आ सकता है। दैवज्ञान पर जिन्हें विश्वास नहीं रहता, जो दैवज्ञान नहीं जानते हैं उन्हें कर्म का विधान समझ में नहीं आ सकता है। इस विषय में अत्यन्त महान ज्ञानी योगी वेमन ने अपने दोहों में इस प्रकार कहा है।

तेलुगू में,

तेलिविनोन्दलेक तिरमुनु बड़यक
तिरुगु नस्थिरुंड़य देहि जगति
तिरुग नेल कर्म तेलिय दिव्यज्ञानी
विश्वदाभिराम विनुरवेमा।

परंग निलनु मुन्दु ब्रतुकु तीरेरुन्गक
सकल संपदलनु सतमुलनुचु
कर्म मर्ममुलनु कनलेरु मुर्खुलु
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा।

thrithashakam.36

वेमन जी के दोनों दोहों के भावार्थ में पहले दोहे में दिव्यज्ञानी मात्र ही कर्म को जान सकते हैं, कर्म को न जाननेवाले अज्ञानी स्थिर मोक्ष से अनभिज्ञ अस्थिर होकर घुमते रहते हैं, कहा। दूसरे दोहे में धरती पर समस्त संपन्नता सदा नहीं रहती है, संपन्नता पर ध्यान युक्त होकर मुर्ख लोग कर्म के मर्म को नहीं जान पाते हैं। दोनों दोहों के सारांश में दिव्यज्ञानी को मात्र ही कर्म का तात्पर्य ज्ञात होता है, मुर्ख अज्ञानी कर्म को नहीं जान पाते हैं, बतलाया गया।

14) **प्रश्न ;–** मनुष्यों द्वारा किया हुआ अनेकों अच्छे कार्यों का फल, तथा बुरे कार्यों का फल पुण्यों और पापों के मिलन को कर्मसंगम कहा जाता है। संगम अर्थात् एक समूह या अम्बार। तीनों मूल ग्रन्थों में कर्म संगम को ग्रन्थ कहना सूचित हुआ। अज्ञानी इसे नहीं जान सकते, केवल ज्ञानियों को मात्र ही लिखित कर्म ज्ञात होता है। बड़े-बुजुर्गों का कहा गया लिखित कर्म एक ग्रन्थ रुप में विद्यमान है हम सब को थोड़ा समझ में आया है। इस विषय में मेरे अन्दर एक प्रश्न उठ रहा है। वह यह है कि क्या -मर्म रुप में विद्यमान कर्म ग्रन्थ कुछ भागों में हैं ? या पाप और पुण्य अलग-अलग होने के कारण कर्म रुपी ग्रन्थ दो भागों में बँटा हुआ है ? या एक ही भाग में है ? समझाइए।

उ ;– आपका प्रश्न बिलकुल सही है, परन्तु कर्म के बारें बतानेवाला मैं कौन होता हूँ। कर्म के बारें में बताने के लिए बड़े-बड़े ज्ञानी ही लड़खड़ा जाते हैं। क्योंकि बहुत ही तीक्ष्ण ज्ञान दृष्टि रखने वाले लोग ही कर्म के बारें में ठीक-ठीक वर्णन कर सकते है। फिर भी आपने पुछा इसलिए जहाँ तक मुझे जानकारी है बताने का प्रयत्न करता हूँ। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ कि पहुँचे हुए ज्ञानी जनों के लिए ही कौन सा कर्म है, कौन सा कर्म नहीं है, अपनी अनभिज्ञता के कारण भ्रम में पड़ रहे हैं भगवद् गीता में भगवान ने स्वयं कहा। भगवद् गीता में ज्ञान योग अध्याय, 16 वाँ श्लोक में इस प्रकार से कहा गया।

श्लोक।। "किं कर्म किम कर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिता;"

भाव ;- "कौन सा कर्म है, कौन सा कर्म नहीं है पंड़ित(ज्ञानी) जन भी नहीं जानते हैं और भ्रम में पड़ रहे हैं," कहा। वेमन योगी ने " दिव्यज्ञानी ही कर्म को जान सकते है। अन्य लोग कर्म को जान नहीं सकते हैं," कहा। भगवान श्री कृष्ण, तथा महायोगी वेमन जी बताने के अनुसार कर्म के विषय में जो भी बातें कहें

thraithashakam-36

सावधानी से, कर्म के बारें में पूर्णत; जानकारी रखकर बातें बतानी चाहिए। मैं वेमन योगी जितना योगी नहीं हूँ, किन्तु मेरा पड़ोसी, मेरा हितैषी की सहायता से हम दोनों का कहना इस प्रकार से है।

कर्म खान की भाँति होता है। खान में जितना खोदो खनिज मिलता ही रहता है। खनिजों के खान की तरह होता है मर्म ग्रन्थ। मर्म ग्रन्थ को अज्ञानी लोग खोलकर देखें तो सारे पेपर रिक्त ही नजर आयेंगे। उसमें कुछ भी लिखा हुआ नजर नहीं आएगा। सब लोगों के नजर अगोचर है इसलिए उसे मर्म ग्रन्थ कहा गया। इस विषय में वेमन योगी ने अपने दोहे में इस प्रकार से कहा।

तेलुगु में

कर्मजालमनुचु घनुलेल्ला बलेरु
कर्ममेमि? दानि घनतयेमि?
तेलुपो, नलुपो, येरुपो, तेलिसिनं बल्कुंडु
विश्वदाभिराम विनुरवेमा,

वेमन योगी ने इस दोहे में, कर्म के बारें में वर्णन कर रहा उन्नत व्यक्ति भी नहीं जानता है कि कर्म कौन सा है, उसकी महानता क्या है। कर्म ग्रन्थ को खोलकर देखने पर उसमें न ही काले रंग के अक्षर, न ही सफेद रंग की लिखावट, न ही लाल रंग से लिखित नजर आएगा। इससे समझ सकते हैं कि मर्म ग्रन्थ के बारें में पूर्ण जानकारी रखकर ही बातें कहनी चाहिए। इसके बारें में मैं अभी विवरण नहीं बता सकता, परन्तु मेरा साथी सब जानकारी रखता है वो ही कर्म के मर्म को स्वयं कह रहा है, ध्यान से सुनिए। कर्म कितना बड़ा ग्रन्थ है कोई नहीं जानता। उस ग्रन्थ को जितना भी पढें वह ग्रन्थ समाप्त नहीं होगा। क्योंकि जितने भी पन्नों को पढकर फाड़ा गया उतने ही पन्नें, या उससे दोगुने पन्नों को ग्रन्थ के आखिर में मैं ही जोड़ता चला जाता हूँ। पढकर फाड़े हुए पन्नों पर नया कर्म लिखकर जोड़ने के कारण जो भी जितना भी पढें वह समाप्त नहीं होगा। धरती पर कर्म ग्रन्थ मर्म ग्रन्थ के रुप में विद्यमान है नब्बे प्रतिशत लोग नहीं जानते हैं। केवक दस प्रतिशत लोगों को मालूम है कि उनका कर्म से भरा मर्म ग्रन्थ विद्यमान है, उसमें से सात प्रतिशत लोगों को लिखित(कर्म) नजर नहीं आता है। बाकि तीन प्रतिशत लोगों को कर्म ग्रन्थ में लिखित नजर आता

thrainashakam-36

है, पढते भी हैं, उन लोगों में से दो प्रतिशत लोग यह नहीं जानते कि उन पन्नों को बढाने वाला मैं हूँ। सौ प्रतिशत में से एक प्रतिशत लोग ही जानते हैं कि कर्म ग्रन्थ शिथिल कभी नहीं होता है, जितना भी पढते जाओ कभी भी समाप्त नहीं होगा पन्नें जुड़ते जाते हैं, उस ग्रन्थ का रक्षक, पर्यावेक्षक के रुप में मेरा मौजुद होना जाननेवाले, ग्रन्थ को छोड़कर मेरे ऊपर ध्यान लगाकर मेरे साथ एकान्त सहवास करने के कारण, उनके सिर में मर्म रुपी कर्म ग्रन्थ को मैं ही निकाल देता हूँ। कर्म ग्रन्थ जिसके सिर से हट जाता हो वह व्यक्ति मेरे समान हो जाता है। क्योंकि मेरे में कोई ग्रन्थ नहीं है, मेरे जैसा उसका भी ग्रन्थ नहीं रहा इसलिए दोनों मिल जुल कर रहेंगे। मान लें वो तीन, और मैं छ; हूँ। दोनों मिल जाए तो क्या होता है आप ही बताइए। क्या होता है? केवल नौ होगा बस! इसमें रहस्य क्या है। तीन और छ; मिलने से नौ होता है न!"

15) **प्रश्न ;-** मैने क्या पुछा था? आपने क्या बताया? मैंने पुछा था क्या ग्रन्थ भागों में हैं, आप मेरे बातों का उत्तर न देकर बात को इधर-उधर घुमाकर कहीं और ले जाकर तीन और छ; मिलने से नौ होता है, कह रहे हैं। यह तीन क्या है, यह छ; क्या है, यह नौ क्या है मुझे रत्ती भर भी समझ में नहीं आया। इन सब बातों को छोड़कर मेरे प्रश्न का उत्तर दीजिए। असल में तुम्हें मेरे प्रश्न का उत्तर मालूम है या नहीं पहले मुझे बताओ?

उ) ;- तुम्हारे पुछे हुए प्रश्न का उत्तर मैंने चाहते हुए भी नहीं दिया। तेरे स्तर को जब तुम जानोगे तब सामनेवाले के स्तर का अनुमान लगा पाओगे। इस कारण तेरा स्तर कितना है बताने के लिए ही तीन और छ; नौ कहा मैंने। हमेशा तुम तीन, और मैं छ; ही रहूँगा। अभी तेरे साथ बात करनेवाला तीन अर्थात् मनुष्य नहीं, छ; अर्थात् मैं था। मैंने पहले ही, तेरे सामने खड़ा मनुष्य तेरे प्रश्न का उत्तर मैं नहीं दे सकता, मेरे साथ में रहनेवाला बताएगा, कहा था। वह बात तुम्हे समझ में नहीं आया होगा। इस कारण तुम ने मुझे वो समझा। तेरे सामने खड़ा व्यक्ति तीन, तथा बातें करनेवाला छ; था। यह सब तुम समझ नहीं सकते, इसलिए तेरे पुछे हुए प्रश्न का उत्तर तेरे सामने खड़ा व्यक्ति ही देगा। उन से मैं ही कहलवाऊँगा, सुनो। मर्म ग्रन्थ नामक कर्म ग्रन्थ तुम जैसा सोच रहे हो दो भागों में नहीं है, किन्तु वह ग्रंथ तीन अध्यायों में हैं। एक-एक अध्याय में बारह पाठों के अनुसार तीन अध्यायों में 36 पाठ होते हैं। एक-एक पाठ में नौ समाचार होते हैं। इस हिसाब से कुल मिलाकर 324 समाचार हुए।

यहाँ पर मुख्य रुप से गौर करनेवाला विषय यह है कि वास्तव में कर्म ग्रन्थ 324 पन्नों का पुस्तक है। फिर भी जितने पन्नों को पढते जाओगे उतने ही पन्नें बढते रहने के कारण न अन्त होनेवाला ग्रन्थ बन गया। कोई भी समझ न सका कि इसके पन्नें इतने सारे कैसे हो सकते हैं। योगियों में से कुछ योगीयों को मात्र ही कर्म ग्रन्थ में मर्म की जानकारी रहती है। फिर भी उनके बताने के बावजुद भी अन्य लोग सुनने की स्थीति में नहीं हैं। यही कारण है कर्म ग्रन्थ हो, कर्म ग्रन्थ में कर्म सिद्धान्त हो किसी के समझ में नहीं आया। परमात्मा ने पूर्व ही ज्ञान सूचित किया फिर भी हिन्दू समाज में कर्म का विषय पूरी तरह से मर्म बन गया है। उसके बाद आए मतों में कर्म का विधान मालूम न पड़ सका। नास्तिकवादी, कर्म शब्द को असत्य मान बैठे हैं। ईसाई, इस्लाम समाजों में कर्म का तात्पर्य उनके अवगाहना में न आ सका। बायबिल ग्रन्थ से ज्यादा क़ुरआन ग्रन्थ में कर्म शब्द अधिक बार लिखा होने पर भी उसे कहीं दूर स्वर्ग और नरक निमित्त माना गया। बायबिल में कर्म को अत्यधिक पाप कहा गया, क़ुरआन ग्रन्थ में कर्मलिखित, कर्म ग्रन्थ, कर्म-पत्र शब्दों का उपयोग कर निकट भाव बतलाया गया, कर्म को स्वर्ग और नरक निमित्त सही भाव बताने के बावजुद भी स्वर्ग और नरक को कहीं और समझकर गलत फहमी में पड़ गए हैं। तथा मोक्ष जन्म रहित विधान को स्वर्ग से तुलना करने में कर्म विधान, कर्म रहित विधान दोनों पूर्ण रुप से पता न चल सका। क़ुरआन ग्रन्थ में बहुत ही उत्कृष्ट ज्ञान होते हुए भी एक प्रकार से देखा जाय तो मुस्लिमों ने उसे पूर्ण रुप से पा नहीं सकें। कर्म के विधान में मुस्लिम जिब्राईल ने बताए स्तर तक नहीं पहुँच पायें। मुस्लिमों ने ही नहीं बल्कि अन्य सभी मतों के लोगों ने कर्म के बारें में अवगाहना नहीं कर पायें।

16) **प्रश्न ;–** आपके बताए हुए विधान में कर्म कहाँ पर रहता है ?

उ ;– शरीर में ही सिर के अन्दर ब्रम्ह, काल, कर्म, गुण चक्रों में चार चक्रों का समूह में ऊपर से ब्रम्हचक्र को छोड़कर नीचे काल, कर्म, गुण चक्रों को परिशीलन कर देखें तो, तीन चक्रों में से मध्य कर्म चक्र में कर्म एकत्रित होकर रहता है, कर्मचक्र ही कर्म का ग्रन्थ रुप होता है, कर्मचक्र में ही कर्म अंकित हो जाता है, सूचित हो रहा है। प्रत्येक मनुष्य के शरीर के अन्दर आत्मा उनका पर्यावेक्षक बनकर, उनके कर्मचक्र में उनके किए हुए अच्छे-बुरे कार्यों से पुण्य और पापों को अंकित करता रहता है। इसी बारें में क़ुरआन ग्रन्थ में 50 वाँ सूरा18 वाँ आयत में इस प्रकार से कहा गया है देखिए। "मनुष्य के जबान से कोई बात निकलने से पहले ही, उनके पास रह रहा पर्यावेक्षक, उसे सुरक्षित कर रखने के लिए(लिखकर रखने के लिए) तैयार रहता

है।" इस आयत में पर्यावेक्षक नाम के अनुसार मनुष्य के शरीर के अन्दर सभी कार्यों को करते हुए मनुष्य द्वारा अर्जित अच्छे-बुरें को पुण्य-पापों के रुप में अंकित कर रहा है। अत ; कुरआन ग्रन्थ में आत्मा को लक्ष्य कर पर्यावेक्षक(संरक्षक) कहा गया।

17) **प्रश्न ;-** आपने कहा था कि मनुष्य द्वारा किया गया प्रति गलत और सही को अंकित करनेवाला एक मौजुद होता है, उन्हें ही पर्यावेक्षक(संरक्षक) या आत्मा कहते हैं। ऐसे में उनके पसन्दीदा लोग गलती करें तो सही, तथा नपसन्दीदा लोग सही करें तो गलत, अंकित कर सकते है न ! यदि वैसा हुआ तो जिसने गलती नहीं किया बेवजह वह दंड़ का शिकार बन सकता है न ! जिसने गलती नही की उन पर गलत आरोप लगना सही बात नहीं है न ! क्या कहीं पर भी इस प्रकार से होने की संभावनाएँ हो सकती है ?

उ) ;- वहाँ अच्छा-बुरें को अंकित करनेवाला पर्यावेक्षक(संरक्षक) या देखभाल करनेवाला होता है। वे हमारे सरकार में चपरासी जैसा व्यक्ति नहीं है। धरती पर स्थूल रुप में हम सबको नजर आ रहा सरकारी नौकरी करनेवाला चपरासी(गुलामी करनेवाला) या सेवा करने वाला, भ्रष्टाचार अवैध काम कुछ भी कर सकता है। घूस लेकर इधर का माल उधर, उधर का माल इधर कर सकता है। अप्रत्यक्ष शरीर के अन्दर हो रहे परमात्मा पालन(आँतरिक सरकार) में स्वच्छता से पालन होता है। परमात्मज्ञान सम्पूर्ण रुप से जाननेवाले ही परमात्म सरकार में सेवक और पालक होते हैं। परमात्म सरकार का पालन हर शरीर के अन्दर होता रहता है। सारे मनुष्यों को प्रत्यक्ष रुप से नजर आ रहा राजकीय ही जानते हैं, किन्तु शरीर के अन्दर हो रहे राजकीय को नहीं जानते हैं। प्रत्यक्ष रुप में कोई भी व्यक्ति राजा, मंत्री के पद पर कुछ दिनों तक ही रहता है। कुछ दिनों के बाद दूसरे व्यक्ति राजा, मंत्री बनते हैं। परन्तु आँतरिक(शरीर के अन्दर) परिपालन में सरकार कभी नहीं बदलता है। क्योंकि अप्रत्यक्ष(अव्यक्त) सरकार का अधिपति परमात्मा कभी नहीं बदलता है। दुनिया में अनेकों लोग रहते हैं, इसलिए एक के बाद एक राजा बदलते रहता है। पूरी सृष्टि का एक ही परमात्मा होता है, इस कारण बाहर बदलाव आने की तरह शरीर के अन्दर बदलने की गुंजाइश नहीं होती है। शाश्वत रुप से एक ही सरकार, एक ही पालन, एक ही धर्म, एक ही शासन होता है। बाह्य प्रपंच के अन्दर सारे भ्रटाचारी पालकगण राजा से भयभीत हो कर नहीं रहते हैं। परन्तु आँतरिक(शरीर के अन्दर) सरकार के अन्दर सारे पालकगण परमात्मा के प्रति विधेयता से नीति से पालन करते हैं। इस कारण परमात्मा पालन में गैर कानूनी काम करना

thraithashakam-36

नमुमकीन है। इस बात का समर्थन करते हुए क़ुरआन ग्रन्थ में 18 वाँ सुरा, 49 वाँ आयत के अंत में "तेरा रब किसी के साथ भी अन्याय नहीं करेगा" कहा गया।

हमने बताया था कि हर शरीर के अन्दर उनके अपने अच्छे-बुरे कर्मों को अंकित(रिकार्ड) करनेवाला पर्यावेक्षक(संरक्षक) होता है। एक पर्यावेक्षक(संरक्षक) कहते हुए 50 वाँ सूरा18 वाँ वाक्य में बताया गया है। 17 वाँ आयत में "वो जो भी करे अंकित करनेवाले दोनों होते हैं। एक दायाँ तरफ, दूसरा बायाँ तरफ बैठ कर अंकित कर रहे होते हैं।" इस वाक्य में वो का अर्थ था मनुष्य। एक मनुष्य कुछ भी करे, चाहे वह अच्छा हो, बुरा हो या अच्छी बात हो बुरी बात हो अंकित करनेवाले दो होते हैं कहा गया। 18 वाँ आयत में सब कुछ अंकित करनेवाला एक पर्यावेक्षक(संरक्षक) होता है, कहा गया। यहाँ 17 वाँ आयत में अंकित करनेवाला दायाँ, बायाँ दो कहते हुए, 18 आयत में एक पर्यावेक्षक(परिशीलक) कहना, 17 वाँ तथा 18 वाँ दोनों आयतें परस्पर विपरीत भाव बताते हैं। कर्म अथवा सही और गलतियों को, या पुण्य और पापों को अंकित करनेवाले हर मनुष्य में दायाँ और बायाँ तरफ दोनों 17 वाँ वाक्य में कहा गया है। इस वाक्य की स्पष्टता को समझना हो तो सबसे पहले अंकित करनेवाले दोनों कौन हैं मालूम करना होगा? ये दोनों मनुष्य के अन्दर में मौजुद हैं? या बाहर में हैं? इस प्रश्न का जवाब मालूम करना चाहिए। अन्दर या बाहर किसी एक स्थान में जब दोनों हो तो हमलोग भी मनुष्य ही हैं न! हमारे किए अच्छे बुरें कार्यों को अंकित करनेवाला होना चाहिए जिब्राईल के कथनानुसार अंकित करनेवाला क्या कोई है? क्या उनका होना तुम्हे मालूम पड़ा? क्या तुमने देखा? यकीन किया? माना कि तुमने यकीन किया। 17 वाँ आयत में दायाँ, और बायाँ तरफ रहकर दोनों अंकित कर रहे हैं, कहा गया। 18 वाँ वाक्य में हर बात को लिखनेवाला एक परिशीलक होता है कहा गया। अंकित करनेवाले एक है या दो? 17 वाँ आयत सत्य था? या 18 वाँ आयत सत्य था? यदि एक सत्य हुआ तो दूसरा असत्य होगा। इन हालातों में हमलोगों का यकीन किस तरफ होना चाहिए? इतने सारे प्रश्नों का जवाब जान सकें तो रब का बताया हुआ ज्ञान समझ में आ सकेगा।

अब कुछलोगों को एक शंका हो सकती है। वो यह है कि परस्पर विरुद्ध दोनों वाक्य क्या अल्लाह का ही ज्ञान है? प्रश्न उठ सकता है। इसका हमारा जवाब यह है कि इस प्रश्न का जवाब मुस्लिम भाई दे सकते हैं। हलांकि उन लोगों के बारें में मुझे नहीं पता परन्तु, एक प्रकार से देखा जाय तो मैं भी मुस्लिम ही हूँ इसलिए मुझे जो जानकारी है उसे मैं बता सकता हूँ। क़ुरआन को मोहम्द प्रवक्ता से कहनेवाले महाज्ञानी

जिब्राईल थे। सृष्टि के आदि में बताया हुआ ज्ञान को ही जिब्राईल ने मोहम्मद प्रवक्ता जी को बताया। सृष्टि के आदि में कहा गया ज्ञान को सूर्य ने सबसे पहले धरती पर प्रजा को सूचित किया। सबसे पहले धरती पर सूर्य ने बताया हुआ ज्ञान को ही दोबारा अभी मैं तुम्हें बता रहा हूँ श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा था। श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा हुआ ज्ञान को ही भगवद् गीता कहते हैं। इससे हमें पता चलता है कि आदि में ही भगवद् गीता ज्ञान सूचित हुआ था, और उसी ज्ञान को जिब्राईल ने मोहम्मद प्रवक्ता को बताया। इसलिए क़ुरआन को दैव ग्रन्थ कहना चाहिए। हमारे नजर में भगवद् गीता के ज्ञान में, तथा क़ुरआन के ज्ञान में मुझे कोई अन्तर नजर नहीं आ रहा है। प्रथम बतलाया हुआ गीता ज्ञान को प्रथम दैव ग्रन्थ कहते हैं। उसके बाद बतलाया हुआ ज्ञान को अंतिम दैव ग्रन्थ कहते हैं। परमात्म ज्ञान आदि, अंतिम ग्रन्थों में दोनो में सम्पूर्ण है। अत ; क़ुरआन और भगवद् गीता से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं कह सकते हैं। परमात्मज्ञान एक होते हुए भी एक-एक मनुष्य को एक-एक प्रकार से समझ में आ सकता है, और हुआ भी वही। इसीलिए हिन्दू कहते हैं भगवद् गीता हिन्दूओं का है, तथा मुस्लिम कहते हैं क़ुरआन मुस्लिमों का है। वास्तविकता देखें तो दोनों में एक ही ज्ञान है यह बात हम जानते हैं। यही विषय सबलोग जानें, मुस्लिम भगवद् गीता को, हिन्दू क़ुरआन को पढें और उसमें सत्यता को जानने की कोशिश करें यही कामना करते हैं हम।

मुझे यकीन है कि मुझे ज्ञात हुआ गीताज्ञान के द्वारा, क़ुरआन ज्ञान को सुलभता से बोध कर सकता हूँ। यही कारण है कि 50 वँ सूरामें 17, 18 आयतें परस्पर एक दूसरे के विरुद्ध वाक्य होते हुए भी मुझे सुलभता से भाव समझ में आ सका। ये दोनों वाक्य एक दूसरे के विरुद्ध नजर आने के बावजुद भी दोनों में एक ही भाव समाया, सूचित हो रहा है। यह बात कई लोगों को आश्चर्य में डाल सकता है, मेरी बात बिलकुल सत्य है इसलिए आपसे कह रहा हूँ मैं।

50 वाँ सूरा21 वाक्य(आयत) में तीन पुरुष नजर आ रहे हैं। अब वाक्य पर गौर करते हैं। हर व्यक्ति (जीवात्मा) "एक हांकनेवाले के साथ, एक गवाह के साथ हाजिर होगा।" ऐसा (क़ुरआन मजीद में) हर व्यक्ति के साथ उसे साथ ले आनेवाला, एक गवाह देनेवाला, मौजुद स्थीति में हाजिर होगा ऐसा(अंतिम ग्रन्थ दैवग्रन्थ क़ुरआन में) हर व्यक्ति के साथ एक हांकने वाला, एक गवाह देनेवाला, मौजुद स्थीति में आएगा ऐसा (दिव्य क़ुरआन में) हर आत्मा एक हांकनेवाले के साथ और एक गवाह देनेवाले के साथ आता है ऐसा (क़ुरआन भाव अमृत में) दिया गया। चार क़ुरआन ग्रन्थ में लिखें हुए विषय को ही हमने लिखा है।

चारों ग्रन्थों में भाषा थोड़ा अलग होते हुए भी एक ही भाव सूचित कर रहा है। 21 वाँ वाक्य में तीनों नजर आ रहे हैं। हर मनुष्य एक हांकनेवाले, एक गवाह देनेवाले के साथ आ रहा है ऐसा दिया गया है। चलवानेवाला या हांकनेवाला पहला, गवाह देनेवाला दूसरा, तथा जिसे हांका जाता है तीसरा, कुल मिलाकर तीनों के बारें में इस वाक्य में कहा गया। इन तीनों में गवाह देनेवाला, तथा जिसे हांका जाता है वे दोनों अपने आप स्वयं कोई कार्य नहीं करते सूचित हो रहा है। गवाह देनेवाला कोई कार्य न कर तटस्थ रहता है, जिसे चलवाया जाता है वह खुद नहीं चलता दूसरों द्वारा चलवाया जाता है। हांकनेवाला या चलानेवाला मुख्य भूमिका निभाते हुए , सर्व जगत के अन्दर सारें मनुष्यों में हरकत लाकर संचालन करता रहता है। हांकनेवाला सब में हरकतें लाकर कार्य करवाने के कारण प्रपंच में अनेकों कार्य होते रहते हैं। आत्मा गँवाता है तो मनुष्य गाता है, हांकनेवाला हांकता रहे मनुष्य सारे कार्यों को करता रहता है। कोई भी मनुष्य धरती पर स्वयं कोई कार्य नहीं करता है। आत्मा, जीव या जीवात्मा को हांकता रहता है मरण तक मनुष्य कार्य करता रहता है। गवाह हिलने, तथा हिलानेवाला दोनों को देखते रहता है। आत्मा, चैतन्य के रुप में रहकर जीवात्मा से हरकतें करवाता है। क्योंकि जीवात्मा स्वयं हिलने की स्थिीति नहीं होता है। हांकनेवाला, जिसे हांका जाता उसके सारे अच्छे-बुरें को अंकित करता रहता है। आत्म रुपी परिशीलक पूरे शरीर में व्याप्त होकर, मनुष्य अपने मन में जो भी सोचता है उसे अंकित करता जाता है। जीवात्मा उसे चलवानेवाला अर्थात् आत्मा के विषय से अनभिज्ञ रहकर, मैं स्वयं ही चल रहा हूँ सोच रहा हो तो वह गलती करनेवाला कहलाएगा। और तब परिशीलक, परिरक्षक आत्मा उसके सोच में जो भी हो सब अंकित कर लेता है। पूरे शरीर में व्याप्त परिरक्षक के रुप में मौजुद आत्मा अकेले ही शरीर में दायाँ, तथा बायाँ दोनों ओर व्याप्त रहता है। शरीर एवं जीवात्मा को हांकनेवाला पूरे शरीर में दायाँ तथा बायाँ में व्याप्त है। इस प्रकार शरीर में संचालन करने वाला आत्मा, संचालन होनेवाला जीवात्मा दोनों मौजुद हैं। जीवात्मा के साथ आत्मा सर्वदा सहवासी बनकर जीवात्मा जो भी सोचे उसे तुरन्त लिखितपूर्वक करता रहता है। उस लिखित पूर्वक ग्रन्थ को कर्म-पत्र कहा जाता है।

जीवात्मा, आत्मा के अलावा शरीर के अन्दर, शरीर के बाहर हर कण-कण में सर्वत्र व्याप्त है ईश्वर। ईश्वर क्रियारहित, कार्यरहित, परमात्मा का कोई नाम नहीं हैं। परमात्मा नाम, रुप, क्रियारहित होना ही परमात्मा का मुख्य धर्म है। परमात्मा देखता है कुछ करता नहीं है। परमात्मा बिना कुछ किए ही करनेवाले

सारे कार्यों को उनके पालन में रहनेवाले ही करते हैं। परमात्मा की पूरी सृष्टि परमात्मा के सेवक, देवदूत अर्थात् ग्रहों के कारण, भूतों के कारण होता रहता है। इसलिए उन्हे देखनेवाला या दर्शक, अर्थात् गवाह बनकर रहनेवाला सूचित हो रहा है। 50 वाँ सूरामें 21 वाँ वाक्यानुसार, जिसे हाँका जाता हो जीवात्मा, हाँकनेवाला आत्मा, सब कुछ देख रहा परमात्मा(ईश्वर) तीनों रहते है, स्मरण में रखना चाहिए। 17 वाँ वाक्य में दायाँ, बायाँ दोनों ओर अंकित करनेवाले मौजुद, कहना एक विवरण सूचित हो रहा है। जो इस प्रकार है मनुष्य ने किए हुए सारे कार्यों में अच्छे-बुरें दो प्रकार के कार्य होते हैं। अच्छे कार्यों को अंकित करनेवाले को दायाँ तरफ रहनेवाला, बुरे कार्यों को अंकित करनेवाले को बायाँ तरफ रहनेवाला कहा गया। कुरआन ग्रन्थ में "यह मुतषाभिहात" वाक्य है। इस वाक्य को स्थूल रुप से देखें तो कुछ भी ज्ञात नहीं हो पाएगा। इसे सूक्ष्म रुप में ही समझने की आवश्यकता है। इस कारण जिस व्यक्ति में अवगाहना रहती है, शरीर में दोनों तरफ व्याप्त अच्छे-बुरे दोनों को अंकित करनेवाला आत्मा को ही दायाँ बायाँ तरफ रहनेवाला, कहा गया। हर मनुष्य के साथ होता है एक सहवासी। वे ही आत्मा हैं, वे जीवन भर तुम्हारे साथ ही रहेगा। वे ही मनुष्य को मरण तक, मरण से पैदा होने तक ले जाते रहता है। पैदा होने से लेकर मृत्यु तक चलवाते ही रहता है। वह सहवासी कौन है कोई नहीं जानता। तेरे सहवासी के बारें में परमात्मा ने कुरआन ग्रन्थ में कितना कुछ बताया है, मनुष्य उसे ग्रहण नहीं कर पा रहा है, कुछलोग सहवासी, पर्यावेक्ष्क अर्थात् देखभाल करनेवाले आत्मा की तुलना शैतान से कर रहे हैं। शैतान(माया)अलग सहवासी अलग मनुष्य की अवगाहना में नहीं आ रहा है। इस वजह से कुरआन ग्रन्थ में बहुत सारे ज्ञान विषय होते हुए भी बहुत लोगों को उस ग्रन्थ में एकेश्वर की उपासना के अलावा एकेश्वर का ज्ञान जरा भी नहीं जानते हैं। एकेश्वर अर्थात् परमात्मा को जानना हो तो कुरआन ग्रन्थ से कर्म क्या है, कर्म मनुष्य के प्रति कैसे अमल में आता है, कैसे अर्जित हो रहा है प्रथम जानना होगा। दैवग्रन्थ पास होते हुए भी दैव धर्मों में से किसी के बारें में भी मनुष्य जान ही नहीं पा रहा है। परमात्मा सूक्ष्म (अव्यक्त) होता है। परमात्मा का ज्ञान भी सूक्ष्म रुप में ही होता है। उस ज्ञान को सूक्ष्म रुपी वाक्यों से, सूक्ष्मरुपी विवरण से ही जानना होगा। न कि सारे सूक्ष्म धर्मों को कल्पित कहकर बहाना बनाया जाए। सूक्ष्मरुपी विवरण न मालूम हो तो, कुरआन के वाक्य परस्पर विरुद्ध ही नजर आ सकते हैं। और ये वाक्य कभी भी समझ में नहीं आ सकेंगे। 50 वाँ सूरामें 17 वाँ वाक्य तथा 18 वाँ वाक्य का यथार्थ अर्थ को सूक्ष्म ग्रहीताहीन लोग कभी समझ नहीं सकते हैं।

thraithashakam.36

जिसका संचालन होता है, संचालन करनेवाला, गवाह बनकर रहनेवाला इन तीनों के अलावा इस प्रपंच में और कोई नहीं है। हर जीव या प्राणी जीवात्मा, उन सब को हाँकनेवाला आत्मा, गवाह बनकर परमात्मा रहता है। इन तीनों आत्माओं के अलावे बाकि सब प्रकृतिमय है। जीवात्मा अनेकों प्राणीयों के रुप में पूरे प्रपंच में भरे हुए हैं। आत्मा हर प्राणी के शरीर में जीवात्मा के साथ सहवासी बनकर, या साथी आत्मा के रुप में नाम प्राप्त है। बायबिल में दूसरे आत्मा को पड़ोसी कहा है। तीसरा आत्मा से भिन्न परमात्मा है। जिसे ईश्वर कहा गया है। मनुष्य जाति मतों से भिन्न-भिन्न होते हुए भी सबका परमात्मा गवाह के रुप में एक ही है, सभी मतों (धर्मों) के लोग मनुष्य ही हैं, तथा शरीर के अन्दर रह रहे प्राणी या जीव ही हैं। किसी भी मत (धर्म) का व्यक्ति हो, उनके पूरे शरीर में आत्मा ही व्याप्त है, शरीर में आत्मा व्याप्त होकर उनका संचालन करती है। आत्म संचालन के बिना किसी भी मत(धर्म) का व्यक्ति हिल नहीं सकता है। हमें विचार करना चाहिए कि आत्मा के बिना कोई है ही नहीं। आत्मा हर एक मनुष्य में रहकर उसे चलवाती है, इस विषय से अनजान विवेकहीन(अज्ञानी) मनुष्य, घटित कार्यों का दायित्व खुद को मान रहा है। प्रपंच में मनुष्य के शरीर के अन्दर आत्मा का विधान किसी को मालूम न हो सका। मैं अभी इस ग्रन्थ को लिख रहा हूँ इसका तात्पर्य जीवात्मा अर्थात् मैं नहीं लिख रहा। इस पूरे कार्य को आत्मा कर रही है। मन्दिर में पुजारी पुजा कर रहा हो, एक हत्यारा दूसरे की हत्या कर रहा हो, कोई व्यक्ति वेश्या के पास जाकर काम-क्रिया करता हो, भूखा आहार ग्रहण करता हो, फुटबॉल प्लेयर मैदान में फुटबॉल खेल रहा हो, युद्ध में सैनिक शत्रु सेना पर गोलाबारी कर रहा हो, कोई पॉलिटिक्स में रहकर चुनाव के लिए भाषण दे रहा हो, एक पायलट आकाश में विमान उड़ा रहा हो, बिल्ली चूहे पर हमला करे, साँप मेंढ़क को पकड़े, एक मत गुरु शिष्यों को बोधन कर रहा हो, डॉक्टर पेशेन्ट का ऑपरेशन कर रहा हो, कोई भी व्यक्ति मेरा लिखा हुआ को देखकर असूय से मेरा दूषण करें, या सम्मान से स्तुति करे इन सारे कार्यों को सभी के अन्दर आत्मा मौजुद रहकर कार्य कर रहा है, हमें भूलना नहीं चाहिए। प्रपंच में समस्त प्राणियों कर रहें सारे कार्यों को आत्मा कर रहा है। इसलिए क़ुरआन ग्रन्थ में महाज्ञानी जिब्राईल ने आत्मा को हांकनेवाला कहा। जिब्राईल जानते थे कि रब कुछ नहीं करता है, इस कारण रब को गवाह कहा। गवाह अर्थात् सभी जीवात्माओं के लिए गवाह बनकर रहना।

जीवात्मा, आत्मा, परमात्मा इन तीनों आत्माओं में परमात्मा साक्ष्यभूत ईश्वर, आत्मा सब का संचालक चैतन्य स्वरुप शक्ति, जीवात्मा सभी शरीरों में कर्म जीव रुप में रहकर कर्म को अनुभव करते हुए जीवन

जीता रहता है। ये तीनों आत्माएँ सृष्टि के आरम्भ से ही हैं। प्रथम सृष्टादि में परमात्मा से आत्मा, जीवात्माओं की सृष्टि हुई। इस कारण सर्व जीवों या प्राणीयों के, उनके अन्दर आत्माओं के परमात्मा ही सृजनहार, अधिपति हैं। आत्मा परमात्मा से पैदा हुआ सर्व प्रपंच का संचालन कर रहा है। परमात्मा के बाद आत्मा शक्तिशाली है। आत्मा परमात्मा का समस्त ज्ञान जानता है। लेकिन जीव पूर्णत; अज्ञानी ही बना रहा। परमात्मा ने मनुष्य के लिए ज्ञान धरती पर तीन विधानों से कहलवाया आज भी वही ज्ञान भगवद् गीता, बायबिल, क़ुरआन ग्रंथों के रुप में होते हुए भी, उन ग्रन्थों में परमात्मज्ञान को न पहचान कर, परमात्मज्ञान को भी मतों(धर्मों) के रंग में रंग दिया गया। मत(धर्म) रुपी माया से बाहर निकल न पाना पूरी सृष्टि के सृजनहार ईश्वर को तुम्हारा हमारा परमात्मा अलग-अलग कर कह रहे हैं। तीनों ग्रन्थों में ज्ञान को भी अलग-अलग माना जा रहा है। जब मनुष्य पूर्णत; विवेकहीन (अज्ञानी) हो जाता है उसके अन्दर आत्मा को ऊ ब होने लगता है और उन्हे कठिनता से दंड़ित करना आरम्भ करता है। फिर भी दंड़ किससे मिल रहा ज्ञात न करने की स्थीति में मानव है।

अज्ञानता से फँसा हुआ मनुष्य को आत्मज्ञान की जानकारी के लिए, परमात्मा ने आध्यात्म विद्या में तीन आत्माओं का तीन पहचान बनाकर रखा। जीवात्मा के लिए संख्या(गणित) शास्त्र से तीन (3) संख्या को पहचान के रुप में रखा गया। आत्मा के लिए छ ; (6) संख्या को पहचान के रुप में रखा गया। ईश्वर यानि परमात्मा को नौ (9) संख्या को पहचान के रुप में रखा गया। इस प्रकार से जीवात्मा, आत्मा, परमात्मा के लिए 3, 6, 9 संख्याओं को प्रतीक के रुप में प्रबन्ध किया गया। इन तीनों अलग-अलग अमूल्य संख्याओं से पहचाने जाने के कारण तीनों आत्माएँ भिन्न-भिन्न रुप में, अलग-अलग प्रभावशाली हैं सुलभता से जाना जा सकता है। हाँकवाया जानेवाला तीन का प्रतीक जीवात्मा, हाँकनेवाला छ ; का प्रतीक आत्मा, गवाह रुप में मौजुद रहनेवाला नौ के रुप में मौजुद ईश्वर है सुलभता से मालूम पड़ रहा है। इन तीनों आत्माओं के विषय में श्री कृष्ण ने भगवद् गीता में पुरुषोत्तम प्राप्ति योग अध्याय में 16, 17 श्लोकों में क्षर, अक्षर, पुरुषोत्तम कहकर विवरण बताया। समस्त प्रपंच के मूल इन तीन आत्माओं को क़ुरआन ग्रन्थ में 50 वाँ सूरा21 वाक्य में बताया गया, फिर भी यह विषय पूर्ण रुप से अवगाहना में नहीं आ सका। इससे पहले पुछे हुए प्रश्न का उत्तर आपको मिल गया होगा। और कोई प्रश्न बचा हो तो पुछ सकते हैं।

18) **प्रश्न ;–** आपने बताया कि कर्म ग्रन्थ में तीन (3) अध्याय, 36 पाठ, 324 समाचार होते हैं,

उन सब का विवरण क्या है समझाइए ?

उ) ;- हमने इससे पहले तीन आत्माओं के बारें में विवरण बताया गया था, जिसमें एक तरफ जीवात्मा दूसरे तरफ परमात्मा, तथा मध्य में आत्मा जो सबका संचालन करता है कहा था। जीवात्मा, आत्मा अर्थात् संचालक से अनभिज्ञ है और सभी कार्यों को वह स्वयं ही कर रहा समझने के कारण हो रहे अच्छे-बुरें कार्यों का वह ही कारण बन रहा है। उससे अर्जित कर्म को शरीर में परिशीलक, पर्यावेक्षक अर्थात् आत्मा जीवात्मा के खाते में अंकित कर रहा है। और इस प्रकार से अंकित हुए सारे पत्र तीन सौ चौबीस (324) हैं। एक वर्ग से संबंधित सारे कर्मों को एक पत्र में लिखा जाता है। उस प्रकार से विभाजित कर्म 324 होने के कारण, तीन सौ चौबीस पत्रों में उनके समाचार लिखे जाते हैं। इन सब का विवरण इस प्रकार से है, देखिए। हमने बताया था कि हर मनुष्य से अच्छे-बुरें कार्यों को करवानेवाला शरीर में मौजुद आत्मा ही है। आत्मा से अनजान लोग हर कार्य को वे ही कर रहे हैं भ्रमित हो रहे हैं। इस प्रकार से सोचने के कारण पाप-पुण्यों को मैं ही कर रहा हूँ सोचकर मनुष्य ही कारण बनता गया। इस कारण से उनके लिए रखा गया कर्म ग्रन्थ में कर्म को आत्मा ही अंकित कर रहा है। लिखे गए कर्मों के अंकित पुस्तक को क़ुरआन ग्रन्थ में 83 वाँ सूरामें 7, 8, 9 वाक्यों में "सिज्जीन" कहा गया। "निश्चित ही पापियों का रिकार्ड (लिखत) सबसे नीची जगह सिज्जीन में है। (8) तू क्या जाने सिज्जीन कैसी है। (9) वह लिखत मुहर किया गया कागजों का गट्ठर हैं।" कागजों का गट्ठर अर्थात् लिखा हुआ ग्रन्थ। लिखने वाला आत्मा है इसलिए मनुष्य के भाव के अनुसार लिखा जाता है। मनुष्य के भावों को ज्ञात करना हो तो मनुष्य के शरीर के अन्दर कर्मचक्र के नीचे गुणचक्र के अन्दर जाना होगा। गुणचक्र के अन्दर जीवात्मा(तुम) रहता है। वहाँ गुणों के अनुसार प्राणी या जीव गुण भाव को पाता रहता है। गुणचक्र तीन भागों में हैं। तीन भागों के तीन नाम हैं। एक भाग का नाम तामस, दूसरा का नाम राजस, तीसरा का नाम सात्विक। इन तीनों भागों में एक-एक में 12 गुण रहते हैं। जिसमें से छ : अच्छें गुण, छ : बुरें गुण होते हैं। बुरें गुण काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर्य। छ ; अच्छें गुण बुरें गुण के भाव सूचित करते हैं। दान, दया, औदार्य, वैराग्य, विनय, प्रेम।

एक गुण भाग में छ ; बुरें गुण, छ ; अच्छें गुण कुल मिलाकर 12 गुण होते हैं। एक भाग में बारह गुणों के अनुसार, तीन गुण भागों में 36 गुण होते हैं। जीव या प्राणी तीन गुण भागों में घुमता रहता है, इसलिए 36 गुण भावों को जीव प्राप्त करता रहता है। हर एक गुण भाग में बारह गुण होते हैं। उन बारह में

से हर एक गुण नौ भागों में विभाजित होते हैं। जैसे कि आशा गुण नौ आशाओं में विभाजित रहते हैं। प्रथम बड़ा उसके बाद छोटा, उसके बाद उससे छोटा होता जाता है। हर गुण नौ प्रकार के परिमाणों में रहता है। इस प्रकार से बारह गुण 108 गुण भागों में बँट गए। हर एक गुण भाग में 108 छोटे-बड़े गुणों में, तीनों गुण भागों में कुल मिलाकर 324 गुण होते हैं। कर्म चक्र तीन भागों में होने के कारण कर्म ग्रन्थ तीन अध्यायों में हैं कहा हमने। वैसे ही हर एक भाग में बारह गुणों के अनुसार, तीन भागों में 36 गुण होने के कारण कर्म ग्रन्थ में 36 पाठ हैं कहा हमने। हर एक गुण नौ भागों में विभाजित होने के कारण हर एक भाग में 108 गुण होने के कारण, गुण चक्र में तीनों गुण भागों में कुल मिलाकर 324 गुण होने के कारण, कर्म ग्रन्थ में 324 समाचार रहते हैं कहा गया।

हर एक मनुष्य, अपने गुणचक्र के अन्दर गुणों के अनुसार भावों को प्राप्त करता है। इसलिए मनुष्य को प्राप्त 324 भावों के अनुसार प्राप्त 324 कर्मो को, शरीर में रहकर चलवाने वाली आत्मा अंकित करते रहती है। इस कारण कर्म के गट्ठर में 324 समाचार 36 पाठों के रुप में हैं, कह सकते हैं। 36 पाठ तामस, राजस, सात्विक तीन अध्यायों में हैं, कह सकते है। मनुष्य को प्राप्त भावों के मुताबिक पाप-पुण्यों को पर्यावेक्षक या देख भाल करनेवाला आत्मा कर्मों के रुप में अंकित करता रहता है। मनुष्य के प्रति भाव के लिए एक कर्म तैयार होता रहता है। हर मनुष्य के अन्दर 162 अच्छें गुण भावों, 162 बुरें गुण भावों होने के कारण कर्म भी उसी के अनुसार अंकित किया जाता है। कर्म ग्रन्थ जितना भी पढ़ें समाप्त नहीं होगा, उस ग्रन्थ से जितने भी पन्नों को बाहर निकाल दिया जाय पन्नें कम न होंगे। इस कारण इस कर्म ग्रन्थ का पूर्ण विषय अनेक लोगों को मालूम नहीं होता है कहा जायेगा। जब कर्म तैयार होना ही न मालूम हो तो, कर्म कैसे अनुभव में आता है पता नहीं चलेगा। कर्म कैसे आता है, कब आता है, कितना समय अनुभव करना पड़ता है पूर्णत; ज्ञात नहीं हो पाता है। कर्म संभावना का विधान लगभग सभी मतों(धर्मो)में ज्ञात न हो सका कहा जाएगा। इसलिए भगवद् गीता में कर्म विधान बताया गया। भगवद् गीता के अलावा बायबिल, कुरआन ग्रन्थों में भी बताया गया है। इसके बावजुद भी कर्म का विधान को न समझकर, उसे अनजाने में ही अर्जित कर रहे हैं, अनुभव कर रहे है।

19) **प्रश्न ;–** परमात्मा के कहे हुए या परमात्मा द्वारा पहुँचाया हुए तीन ग्रन्थों में कर्म के बारें में कहा गया हो तो, हो सकता है सामान्य लोगों को पता न चला हो। ज्ञान में बहुत ही अनुभवी लोगों को, मत(धर्म) के

thraithashakam-36

बड़े लोगों को, मत(धर्म) गुरुओं को, स्वामी जनों को कर्म का पूरा विषय मालूम तो होगा ही ! क्या वे भी कर्म के विधान से अनजान हैं ?

उ) ;- मैं ऐसा क्यों कहूँगा कि कर्म रहस्य से सब अनजान हैं। कुछ लोगों को जानकारी हो सकती है। फिर भी अनेक लोगों के लिए अनजान रहस्य ही कहा जाएगा। अगर कर्म का विधान मालूम रहा होता तो पहले ही उसे अर्जित तथा अंकित न होने देते। पहले से ही अंकित हुआ कर्म हो तो अनुभव से खुद को बचा लेंते। आज कर्म को अनर्जित करनेवालों से ज्यादा, कर्म को अर्जित करनेवाले लोग ही ज्यादा नजर आ रहे हैं। कर्म अर्जित करने के बाद भी उसके बारें में ज्ञान मालूम न हो तो, कर्म अनुभव से कोई नहीं बच सकता। पूजन से, शान्ति पूजन कर कर्म से बचा नहीं जा सकता है। ज्ञान से अनजान रहकर कोई कितना भी बड़ा क्यों न हो कर्म के समक्ष छोटा ही होता है। इस कारण कोई भी मनुष्य उसके अनुभव से खुद को बचा नहीं सकता है।

20) **प्रश्न ;-** परमार्थ ज्ञान, कर्म का विधान सरल था तो, सब लोगों के समझ में आने जैसा परमात्मा ने कहा था तो, सब लोगों को क्यों नहीं समझ में आया ? आखिर कमीं कहाँ रह गई होगी ?

उ) ;- सारी कमीं समझने में होती है। मनुष्य का किया हुआ हर छोटी गलती पाप रुप में, हर छोटी अच्छाई पुण्य के रुप में अंकित करनेवाला मौजुद होता है यहाँ तक की जानकारी करने में किसी भी प्रकार की कोई कमीं नहीं रही। अंकित किया हुआ कर्म कहाँ, कब अनुभव में आएगा जानने में पूर्ण रुप से गलतफहमी में पड़ गए हैं। मृतक को समाधि से उठाया जाता है, उसके बाद उसे उनके कर्मों का (पापों का) दंड दिया जाता है परमात्मा सूचित ज्ञान को अवगाहना में कमीं के कारण गलत रुप में समझकर अन्य लोगों को अपनी समझ के अनुसार बताने के कारण सब लोग गलत राह में भटक गए। क़ुरआन ग्रन्थ में 23 वाँ सूरा, 15, 16 आयतों में इस प्रकार दिया गया है। (15) “फिर उसके बाद तुम जरुर मरनेवाले हो।” (16) “फिर तुम सब कयामत के दिन उठाए जाओगे।” यही बात क़ुरआन ग्रन्थ में कई बार कहा गया है। 83 वाँ सूरा6 वाँ आयत में ‘उस दिन सब लोग अपने रब के सामने खड़े होंगे।” पाँचवाँ आयत में “एक अजमत वाले (पुन;उत्थान) दिन के लिए” कहा गया। इन दोनों वाक्यों से पूरा दृश्य ही बदल गया है। इन दोनों वाक्यों में न ही कोई बड़ी समस्या रही, न ही कोई अर्थ रहित विधान रहा, मरा हुआ मनुष्य को दोबारा अजमत वाले दिन उठाए

जाएगा 23 सूरा 15, 16 वाक्यों में, परमात्मा ने बताया ज्ञान मार्ग को त्याग कर अज्ञान मार्ग में जाकर भिन्न अर्थ को समझा गया। अब अनेक लोगों के समझ में आया विधान देखेंगे।

मनुष्य को मरने के बाद जमीन के अन्दर दफन किया जाता है। जब से प्रपंच पैदा हुआ मरने वालों को दफनाया जाता रहा है। मुस्लिम, ईसाई लोगों का मानना है कि दफन किए हुए सारे लोग समाधि में उसी स्थिति में रहते हैं जिस स्थिति में उन्हें दफनाया गया था, तथा अजमत वाले दिन उन सब को परमात्मा के समक्ष उठाया जाता है, उनके कर्म चिट्ठा को देख कर परमात्मा उन्हें स्वर्ग या नरक देते हैं। समाधि से उठाने का तात्पर्य क्या होता है न मालूम होना, समाधि को जमीन के अन्दर गड्ढ़े को मानने में गलतफहमी हो गयी। मरने के बाद शरीर को दफन किया जाता है, मरनेवाले(शरीर से जानेवाले) को नहीं। शरीर के अन्दर जीनेवाला जीवात्मा अलग, शरीर अलग होता है। जीवात्मा शरीर को छोड़ जाए मरण कहलाता है। जीवात्मा, शरीर में प्रवेश करे जनन कहलाता है। जीवात्मा को पैदा होने के लिए नये शरीर की आवश्यकता पड़ती है। मरे हुए को शरीर के साथ उठाने का तात्पर्य, नया शरीर होता है मालूम न होने के कारण पुराने शरीर को समझना पूर्णतः भूल है। मनुष्य मरण प्राप्त करते ही तुरन्त उनके पाप-पुण्यों के मुताबिक दूसरा जन्म प्राप्त करवाकर, धरती पर ही परमात्मा पैदा करवाता है, अन्य किसी और लोक में भेजता नहीं है। हर कोई अपने कर्म पत्र के अनुसार स्वर्ग, नरक दोनों को धरती पर ही प्रत्यक्ष रुप से अनुभव करता है। परमात्मा ने स्वर्ग और नरक धरती पर हैं, कहा।

अजमत(पुन;उत्थान) का दिन अर्थात् मरकर पैदा होने का दिन। मरने के बाद तुरन्त हर कोई पैदा होता है। मनुष्य मरते ही क्षण भर में ही किया हुआ(संचित) कर्म, प्रारब्ध में परिवर्तित होकर मनुष्य पैदा होने का कारण बनता है। मृत्यु को प्राप्त होनेवाले सारे लोग उनके कर्म निर्माण के अनुसार, उनका पर्यावेक्षक अर्थात् आत्मा जन्म का निर्णय करता है, परमात्मा साक्ष्य रुप में देखता है, मनुष्य अपने कर्मानुसार सुख-दुखों को अनुभव करने के लिए पैदा होते रहता है। ईश्वर ने, मनुष्य द्वारा किए हुए पुण्य के अनुसार स्वर्ग और तथा पापों के अनुसार नरक को यहीं धरती पर निर्माण कर रखा है। हम सब स्वर्ग को अनुभव करने वालों को देखते रहते हैं। नरक को अनुभव करनेवालों को भी देखते रहते हैं। हम सब सुख और दुख को स्वर्ग और नरक के रुप में अनुभव करने वाले लोगों को देखते रहते हैं, फिर भी किसी अन्य स्थान पर स्वर्ग और नरक की कल्पना करना क्या भूल नहीं होगी ! प्रलय दिन में मरा हुआ व्यक्ति को उठाया जाएगा परमात्मा ने

कहा, उस बात को ग्रहण न कर अपने इच्छा के अनुसार विचार करना, और सब को बताना परमात्मा बोध को गलत मार्ग में भटकाना कहा जाएगा। गलत राह में भटकाने वाले लोगों को 2 वाँ सूरा59 वाँ आयत के अनुसार परमात्मा श्राप देंगे कहा। प्रलय का दिन अर्थात् मृत्यु को प्राप्त दिन, समाधि से उठाए जाना अजमत का दिन अर्थात् माता के गर्भ से अनजाने स्थिीति में पैदा होने का दिन होता है इसे न जानकर, कुछ और ही समझना परमात्मा ज्ञान से दूर होना कहा जाएगा। समाधि स्थिीति से पैदा होने वाले सारे लोगों को हम प्रत्यक्ष रुप में देखते रहते हैं। प्रलय उसको मात्र ही आकर, उनके शरीर के अन्दर पंचभूतों में (आकाश, वायु, अग्नि, जल, भूमि) प्रलय आकर, शरीर मरण को प्राप्त होना नित्य होने वाला कार्य है। समाधि को, कब्रों से तुलना करना यथार्थ समाधि को भूल जाना गलत है। पैदा होने से लेकर मृत्यु तक, मृत्यु होने से लेकर पैदा होने तक तुझे हांक कर लाने वाला सर्वदा तेरे साथ रहनेवाला सहवासी यानि आत्मा को भूल जाना पूर्णत: अज्ञानता है। तेरे हर कर्म को तेरे साथ रह रहा आत्मा, संरक्षक बन कर अंकित करना, उसके बाद जन्म के समय में प्रारब्ध कर्म में बदलकर धरती पर सुख-दुखों को अनुभव करवाता है, उन स्वर्ग-नरकों जिन्हें किसी ने नहीं देखा विचारकर, प्रत्यक्ष रुप में अनुभव में आनेवाला को भूल जाना क्या अज्ञानता नहीं है ! जमीन के अन्दर दफनाने वाला र्निजीव शरीर को, सजीव के साथ तुलना कर मरा हुआ व्यक्ति शरीर के साथ पुन: उठेगा विचार करना क्या अज्ञानता नहीं है। अजमत वाला (पुन;उत्थान) दिन ही मरा हुआ दिन होता है, प्रलय के दिन पुन: उठाया जाएगा परमात्मा ने कहा था, मरा हुआ दिन ही शरीर के साथ उठाए जायेंगे समझ कर सृष्टादि से सब मनुष्यों को गड्ढ़े के अन्दर सोया समझना क्या अज्ञानता नहीं है ! दैव ग्रन्थ क़ुरआन में बताए हुए विषयों का मनुष्य भिन्न अर्थ क्यों निकाल रहा है जबकि ऐसी बातों के बारें में कहीं भी जिक्र नहीं किया गया। परमात्मा ने बताए हुए भाव को छोड़कर प्रत्यक्ष नरक को परोक्ष लोक में मौजुद समझना क्या अज्ञानता नहीं है। नरक प्रत्यक्ष रुप में मौजुद है आधार के लिए क़ुरआन ग्रन्थ में 2 वाँ सूरा165 आयत को देखिए। "सारी शक्तियाँ, सारे अधिकार अल्लाह के मुट्ठी में होते हैं, और सजा देने में वे सख्त हैं, इन जालिमों को आगे चल कर कठोर सजा को प्रत्यक्ष देखने के बाद समझ में आने से पहले ही अभी समझ में आ जाए तो कितनी अच्छी बात होगी।" यहाँ पर परमात्मा ने सभी मनुष्य दंड़ को प्रत्यक्ष में देखने से पहले परमात्म ज्ञान को अभी जान लें कितनी अच्छी बात होगी कहा। इस बात से समझ सकते हैं कि नरक दंड़ रुप में, पीड़ा रुप में होता है। मनुष्यों द्वारा किए गए कर्मों को कर्म पत्र में लिखित हुआ 324 पन्नों का बड़ा ग्रन्थ

thraithashakam.36

बन गया। उस ग्रन्थ में कर्मों के अनुसार मनुष्य धरती पर प्रत्यक्ष नरक को अनुभव करता रहता है। फिर भी कर्म क्या है? कर्म को कौन लिख रहा है? उन्हें कर्मानुसार दंड़ कौन दिलवाता है? न जानना जो भी है यही एक जन्म है, इसके बाद कोई जन्म नहीं है, प्रलय काल तक समाधियों में सोए रहेंगे, प्रलय के दिन हमें उठाया जाएगा कहना कहाँ तक उचित है? परमात्मा ने, कभी भी तुम जैसा विचार कर रहे हो बताया? वास्तविक प्रलय काल कब आएगा सोचना छोड़ कर समय को व्यर्थ में गुजारने की अपेक्षा मनुष्य क्यों नहीं विचार करता कि मरण में पिसनेवाला दिन ही प्रलय है पुन: जन्म लेना अजमत (पुन: उत्थान) का दिन होता है? मनुष्य क्यों नहीं विचार करता मरना, पैदा होने का कारण हम सब का कर्मपत्र ही है? अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है। कर्म का तात्पर्य, कर्म को ग्रंथ रुप में अंकित करनेवाला कौन है, पुन; दंड़ित करनेवाला कौन है जान लो। नहीं जानोगे तो, नरक का क्या है? कर्म का क्या है आगे चलकर तेरी जानकारी में आएगा। सावधान!

21) **प्रश्न ;-** माना कि किसी ने एक गलती की हो। उस व्यक्ति को कितना पाप प्राप्त हुआ उन्हे ज्ञात हो सकता है?

उ) ;- किया गया कार्य बुरा हो, या अच्छा हो वह प्रत्यक्ष होता रहता है। फिर भी उस कार्य से प्राप्त फल मर्म में रहता है। उसे कोई नहीं जान सकता। उसे कितना पाप प्राप्त हुआ समझ नहीं सकता। ज्ञान दृष्टि वाले लोग एक कार्य से इतना पाप प्राप्त होगा माप कर बता भी दे, तब तक के लिए वह कथन सत्य भी रहा हो फिर भी, उसके बाद वह कथन सत्य नहीं होगा। एक बार एक कार्य से पाप इतना ही प्राप्त होगा बता पाए तो, वही कार्य जब भी किया जाए क्या उतना ही पाप प्राप्त होगा कई लोग विचार कर सकते हैं। उसी कार्य को दूसरी बार वही व्यक्ति या दूसरा व्यक्ति करता हो प्रथम मनुष्य को प्राप्त पाप दूसरे मनुष्य को भी प्राप्त होगा कहना मुमकीन नहीं होगा। ऐसा होने का कारण यह है कि कार्य कर रहा व्यक्ति उस समय में उसके भावानुसार कर्म की प्राप्ति होती है। एक व्यक्ति एक कार्य को करते समय में प्राप्त पाप(कर्म) तथा वही कार्य को वही व्यक्ति जब दूसरी बार करता हो उससे प्राप्त पाप पहले प्राप्त पाप की अपेक्षा अधिक, या कम हो सकता है। पहली बार करते समय में भाव, दूसरी बार करते समय वही भाव न होने के कारण, पहला तथा दूसरी बार कर रहा कार्य एक होते हुए भी उससे प्राप्त कर्म, कम या अधिक हो सकता है। इस कारण कार्य

thraithashakam 36

को करने से इतना ही कर्म प्राप्त होगा कह नहीं सकते हैं, इसलिए कार्य करते समय उस समय में भाव के अनुसार ही कर्म की प्राप्ति होती है।

उदाहरण हेतु तीन चोर रास्ते में लूट-खसोट करने के इरादे से एक रास्ते में ताक लगाए बैठे थें, माना की। दस दिनों से उस रास्ते से होकर कोई न गुजरने के कारण न ही कोई चोरी हो सकी और न ही उन्हें कोई धन मिला। दस दिनों के बाद एक साथ तीन पथिक उस रास्ते से पैदल चलते हुए जा रहे थे। तीनों पथिकों के पास एक-एक लाख रुपए थें। तीनों के पास कुल मिला कर तीन लाख रुपए हुए। तीनों पथिकों पर उन तीनों चोरों की नजर पड़ी। जैसे ही तीनों पथिक छुपे चोरों के समीप से गुजरें, चोरों ने एक साथ उन पर हमला किया। पथिक तीन, चोर भी तीन थे। उन लोगों के बीच हाथापाई हुई। एक पथिक जिसके पास डंडा था उसने वीरय्या नामक चोर को उस डंडे से मारा। उस चोर को जिसका नाम वीरय्या था गुस्सा आया, उसके पास चाकू था उसी से पथिक पर वार कर मार डाला। दूसरा पथिक तथा जॉन नामक चोर दोनों में खींचातानी हो रहा था कि इतने में जॉन ने जोरों से धक्का दिया, और वह पथिक बड़े पत्थर पर जा गिरा, सिर पर चोट लगने के कारण दूसरा पथिक मर गया। दूसरे चोर उस पथिक को मारना नहीं चाहता था। फिर भी जॉन धक्का देने के कारण पत्थर पर गिर कर मर गया। तीसरा पथिक अपने साथियों को मरा हुआ देखकर बुरी तरह से डर गया, और अपने पास रखे लाख रुपयों को तीसरे चोर को दे दिया, जिसका नाम भाषा था। तीसरे पथिक ने कोई हाथापाई नहीं की सारे रुपयों को तीसरे चोर को दे दिया फिर भी, रुपयों को लेने के बाद भी उस चोर ने तीसरे पथिक को जान से मार डाला। तीनों पथिक, तीनों चोरों के हाथों मारे गए। तीनों चोरों को एक-एक लाख रुपए मिलें। चोरों में पहला वीरय्या हिन्दू, दूसरा जॉन ईसाई, तीसरा भाषा मुस्लिम था। तीनों तीन अलग-अलग मत(धर्म) के थे, तीनों ने मिलकर लूट-मार किया तीनों राहगीर मारे गए। तीनों को एक-एक लाख रुपयों की आमदनी हुई।

उन लोगों को मिला लाभ एक समान होते हुए भी, उनलोगों को प्राप्त हत्या पाप कम अधि थें। पहले चोर यानि वीरय्या को अधिक पाप प्राप्त हुआ, दूसरा चोर जॉन को दोनाँ से कम पाप प्राप्त हुआ। तीसरा चोर यानि भाषा को पहला चोर से अधिक पाप मिला। विवरण इस प्रकार से है कि वीरय्या कओ 80 यूनिट पाप प्राप्त हुआ, जॉन को 40 यूनिट पाप प्राप्त हुआ, भाषा को 100 यूनिट पाप प्राप्त हुआ(समझ में आने हेतु पाप को यूनिट रुप में बताया गया, उस प्रकार से गणना करना मुमकीन नहीं है।) प्रथम चाकू से वार कर पथिक

को मारने वाला वीरय्या को 80 प्रतिशत पाप प्राप्त हुआ। 80 प्रतिशत पाप क्यों प्राप्त हुआ विचार किया जाए तो इस प्रकार से मालूम पड़ता है। वीरय्या पहला पथिक को जान से मारना नहीं चाहता था। उससे खींचातानी कर मार कर भी धन को छीनना चाहता था। पथिक ने डंडे से प्रहार किया, दूसरी बार भी बिना मारे चाकू से वार करना है सोचकर वार किया, उन्हे जान से मारने के लिए वार नहीं किया। एक वार से ही पथिक की मौत हो जाना वीरय्या आश्चर्य हो गया। फिर भी पथिक की मौत उसके चाकू से वार करने हुआ वीरय्या ने समझा। चाकू से वार करने से मर जाएगा जानकर उसने अपनी रक्षा के लिए वार करने के कारण वीरय्या को पथिक को जान से मार डालने का पाप 80 प्रतिशत प्राप्त हुआ। 20 प्रतिशत कम होने का कारण वीरय्या को पहले, या अंत में पथिक को जान से मारने की मनशा नहीं थी। फिर भी इस घटना से चाकू से वार करने के कारण मरना मुमकीन है जानकर वअर करने के कारण पाप प्राप्त हुआ, उन्हे जान से मारने का भाव नहीं था इसलिए 20 प्रतिशत पाप कम होकर 80 प्रतिशत पाप प्राप्त हुआ।

जॉन(चोर) और पथिक दोनों के खींचातानी में चोर ने पथिक को जोरों से धक्का दिया जबकि उन्हे मारने का उसे कोई इरादा नहीं था। उस धक्के से पथिक पत्थर पर गिर कर मर जाएगा उसने सोचा नहीं था। अनजाने में हुई घटना में उनका दायित्व भाव केवल 40 प्रतिशत ही था। इस कारण 60 प्रतिशत पाप जॉन को प्राप्त नहीं हुआ। अब तीसरा चोर भाषा का विषय को देखें तो पथिक ने अपने साथियों को मरा हुआ देखकर, खीचातानी करने से मेरा भी वही हाल होगा सोच कर अपने पास रखे रुपयों को दे दिया। तीसरा चोर (भाषा) ने सोचा अगर इस पथिक को छोड़ दिया जाए तो वह सीधा पुलिस के पास जाकर सारी बातें बता देगा, और गवाही देगा। अगर इसे भी जान से मार दिया जाए तो सारी बातें दबी रह जायेंगी, कोई केस नहीं होगा, सोचकर भाषा ने उस पथिक को मारने का इरादा कर जान से मार डाला। जान से मार डालने के इरादे से मार डालने के कारण भाषा को सौ प्रतिशत पाप प्राप्त हुआ। यहाँ यह बात सिद्ध होता है कि पाप भाव के अनुसार प्राप्त हुआ , कार्य के कारण नहीं। इससे कर्म के विधान से एक सूत्र बनता है। वह यह है कि कार्य से कर्म नहीं आता है, किन्तु भाव के कारण पाप(कर्म) आता है, समझ सकते हैं। कार्य जरा भी न होने के बावजुद भी, केवल भाव से ही, कर्म प्राप्त होता है एक और घटना द्वारा समझ सकते हैं। एक गाँव में सारे वेदों के ज्ञाता सद ब्राम्हण नित्य वेद पठन करना, अपने इष्ट देवता का पूजन करना, अपने घर के सामने पीपल के पेड़ का नित्य आराधना कर परिक्रमा करता रहता था। सुबह उठते ही किसी न किसी देवता की

thraithashakam.36

आराधना करते हुए समय गुजरता था। उस ब्राम्हण के मकान के सामने ही एक वेश्या का मकान था। उस वेश्या के घर प्रति दिन एक के बाद एक तीन या चार विटों (इन्द्रिय –संबन्धी) का आना जाना होता था। उस वेश्या को अपने पेट पालने के लिए, अपना जीवन गुजारने के लिए, कोई रास्ता नजर नहीं आया और वेश्या वृत्ति करने लगी। इस तरह से प्रति दिन तीन या चार विटों के साथ रहनेवाली वेश्या सोचा करती थी कि मैं जो भी कर रही हूँ पाप है, घर के सामने निवास कर रहे ब्राम्हण नित्य दो, तीन देवताओं का पूजन कर पुण्य कार्य कर रहा है। जब भी आरती की घंटी की आवाज सुनाई पड़ता, वह वेश्या विट के बगल में होते हुए भी, ब्राम्हण के पूजा कार्य को याद किया करती थी। वेश्या विट के साथ में होते हुए भी, उसका पूरा ध्यान ब्राम्हण कर रहा आराधना कार्यों पर ही लगा रहता था। इस प्रकार से उसका पेशा वेश्यावृत्ति का होते हुए भी मन दैव चिन्तन पर, पूजन पर लगा रहता था।

वेश्या के घर के सामने रह रहा ब्राम्हण अपने घर के पास ही पीपल के पेड़ की परिक्रमा करते हुए, वेश्या के घर में आने-जानेवालों पर ध्यान केन्द्रित करता रहता था। एक ओर पूजन कार्य करते हुए भी, उसका पूरा मन वेश्या पर, वेश्या के घर आए हुए विटों पर रहता था। वेश्या के घर विट को आया देखकर उसका वापस लौट जाने तक वहाँ हो रहा कार्यों के बारें में मन में सोचा करता था। ब्राम्हण शिव की पूजा करते हुए भी, ध्यान वेश्या पर ही लगा रहता था। ऐसे कई वर्ष बीत गए। एक बार उस ब्राम्हण के गाँव में हैजा की बीमारी फैल गयी। उस गाँव में अनेक लोग उस बीमारी की चपेट में आ गए। एक दिन ब्राम्हण जिस गली में रहता था वहाँ भी हैजा ने प्रवेश किया। एक ही दिन वेश्या और ब्राम्हण दोनों को बीमारी लग गयी। उसके दूसरे दिन ही दोनों की मृत्यु हो गयी। वेश्या तथा ब्राम्हण दोनों की मृत्यु एक साथ ही तीन मिनटों के अन्तर में हुआ। वेश्या के शरीर के अन्दर जीवात्मा को तथा ब्राम्हण के शरीर के अन्दर जीवात्मा को लेने एक ओर देवदूत, दूसरी ओर यमदूत आए। यमदूत ब्राम्हण के घर, तथा देवदूत वेश्या के घर गए। ब्राम्हण ने आप लोग यहाँ क्यों आए हो यमदूतों से प्रश्न किया। उस बात को सुनकर यमदूतों ने तुझे यमलोक में ले जाकर नरक में डालेंगे कहा।

सामनेवाले घर में रह रही वेश्या के घर देवदूतों को आया देख, वे वहाँ क्यों गए हैं यमदूतों से ब्राम्हण ने पूछा। यमदूत ब्राम्हण से बातें करते हुए, सामने वाले घर में मृत स्त्री को (जीवात्मा को) स्वर्गलोक ले जाने देवदूत आए हैं कहा। और तब ब्राम्हण ने "मुझे यमलोक में, उस वेश्या को स्वर्गलोक में ? वह नित्य

पाप कार्यों को किया करती थी। और मैंने नित्य पूजन कार्य अर्थात् आराधना किया" कहा। और तब यमदूतों ने कहा, कार्य करने से पाप और पुण्य की प्राप्ति नहीं होती है। मनुष्य में भाव के अनुसार पाप-पुण्य (कर्म) प्राप्त होते हैं, कहा। ब्राम्हण आराधना कार्यों को करने पर भी अपने मन को वेश्या के घर में रखने के कारण उसके ध्यान के अनुसार ब्राम्हण को पाप प्राप्त हुआ, यमदूतों ने कहा। उसी तरह से वेश्या विटों के पास रहकर पाप कार्यों को करने पर भी, उनका पूरा ध्यान ब्राम्हण के घर में पूजन पर ही रहने के कारण वेश्या को पुण्य प्राप्त हुआ। यही बात देवदूतों ने वेश्या से कहकर उसे स्वर्गलोक लेकर चले गए। इस पूरे विषय पर गौर करने से भाव के कारण कर्म बनता है, कार्य के कारण नही पता चलता है। (यमदूतों, तथा देवदूतों की बातें, पाठकों को विषय समझाने के लिए लिखा गया। वास्तव में न ही कोई यमदूत होते हैं, या न ही कोई देवदूत होते हैं। उसी तरह स्वर्ग और नरक भी कहीं नहीं हैं, जानना चाहिए।)

कर्म सूत्र पर गौर करने से पता चलता है कि कर्म (पाप + पुण्य) भाव से प्राप्त होता है, कार्य से प्राप्त नहीं होता है। इसे ही हम अब भगवद् गीता में मोक्ष सन्यास योग अध्याय 17 वाँ श्लोक में भगवान ने कहा।

श्लोक - यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते ।
हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते ।।

भावार्थ ;- " जिसके भाव में अहंकार नहीं होता हो, जिसे फल की आशा न हो, ऐसा व्यक्ति सब प्राणीयों को मारकर भी, नहीं मारता अर्थात् पाप के फल से नहीं बँधता" कहा। यहाँ कहा गया कार्य छोटा नहीं था। धरती पर सब प्राणियों की हत्या कहा गया। सब की हत्या करना भयंकर पाप होता है सब जानते हैं। बड़ा से बड़ा पाप आनेवाला कार्य में भी यदि अहंकार न हो तो, हत्या करने वाला हत्यारा नहीं होता, हत्या पाप से भी नहीं बँधता ऐसा कृष्ण ने कहा इसका तात्पर्य यह है कि कर रहे कार्य से कर्म का कोई संबंध नहीं होता है, शरीर के अन्दर अहंभाव से ही कर्म बनता है।

भगवद् गीता में श्री कृष्ण ने कहा। बायबिल में ईसा ने इसी विषय में दूसरे दृष्टिकोण से बताया। ईसा की बात, श्री कृष्ण की बात एक ही अर्थ सूचित कर रहे हैं, किन्तु लौकिक दृष्टि से अलग ही नजर आता है। ईसा की बात में भी भाव को ही प्रधानता दिया गया है। मत्ती सूसमाचार 5 वाँ अध्याय 28 वाँ वचन में इस

प्रकार से दिया गया है। "जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका।" इस वाक्य में यदि कार्य न करें भाव में सोचता हो तो भी वह यथार्थ में कर चुका। व्यभिचार पाप उसे प्राप्त हो गया। गीता में कहे हुए वाक्य में कार्य को करने पर भी भाव न होने के कारण, उसे कार्य न करनेवाले में परिगणना करते हुए उसे पाप प्राप्त नहीं है, कहा। गीता, और बायबिल में दिए गए वाक्य एक हैं, गीता में कार्य करना कहा। बायबिल में कार्य न करना कहा। गीता में भाव न रहना कहा। बायबिल में भाव होने से कहा। दोनों वाक्यों में केवल आगे का पीछे, पीछे का आगे बताया गया दोनों वाक्य एक ही अर्थ बताते हैं। कर्म सूत्र के अनुसार कर्म प्राप्त होने के लिए, कार्य मुख्य नहीं होता है, भाव मुख्य होता है, कहा। कार्य द्वारा कर्म नहीं आता है। भाव द्वारा कर्म आता है। कहीं पर भी हो भाव को तथा कार्य को अलग कर देखें, तो भाव रहित कार्य करनेवाला कर्म पर विजय पाता है, कर्मयोगी में बदल जाता है।

मानव मरने के लिए, पैदा होने के लिए कर्म ही कारण होता है। मानव जनन मरण चक्र से बाहर निकलने के लिए कर्म ही रुकावट बनता है। कर्म रहित बन सके तो पैदा होने की आवश्यकता नहीं है। कर्म रहित मनुष्य दैव सन्निधान को पाता है। इसलिए आध्यात्मिक विद्या में कर्म पर विजय पाना मुख्य विषय-वस्तु है। कर्म किस प्रकार से आता हो, जान सको तो सरलता से विजय पाया जा सकेगा। कर्म केवल भाव से आता है, कार्य से नहीं समझ में आ जाएगा। ऐसे में भावों रहित हो जाए तो कर्म रहित हो जायेंगे। केवल भाव को रहित करने से ही कर्म पर सरलता से विजय पाया जा सकेगा। इस सूत्र से अनजान लोग गलत राह में पड़कर, मोक्ष के लिए, पूजा, यज्ञों, वेदों का अध्ययन, दान, तपस्या आदि करते रहते हैं। कुछ लोगों ने मेडिटेशन कहकर ध्यान कर रहे हैं। अनेक प्रकार के साधनाएँ कर रहे हैं। आध्यात्मिक विद्या में खुद को उन्नत समझने वाले भी केवल भाव से कर्म पर विजय पाया जा सकता है न होने के कारण सिर को मुंड़वा कर कुछ लोग, बालों को बढ़ा कर कुछ लोग, कपड़ों को बदलकर कुछ लोग, कपड़ों को उतारकर कुछ लोग, यात्राओं को कर कुछलोग, शरीर में राख लगाकर कुछलोग, ऐसे अनेक प्रकार से तकलिफों को झेल रहे हैं। कुछ भी कर लें कर्म रहित न हो पाओगे। न ही परमात्मा को जान पाओगे। कर्मरहित का दिन ही जन्मरहित होगा। कर्मरहित होने के लिए तप, यज्ञ, वेदों का अध्ययन काम न आ सकेंगे।

प्रति नित्य मनुष्य भाव से युक्त होकर कार्य कर रहा है। इस कारण उस कार्य से मनुष्य को कर्म प्राप्त हो रहे हैं। अगर अब से ही ज्ञान को जानकर कर्म रहस्य को जान सको तो, अब से ही कर्म प्राप्त नहीं होंगे। परन्तु अब से पहले अर्जित कर्मों को निश्चित ही अनुभव करना पड़ेगा।

22) **प्रश्न ;–** अगर इससे पहले किए हुए कार्यों से अंकित हुए सारे कर्मों का ग्रंथ होता हो तो, उस के अनुभव से मुक्त होना क्या मुमकीन होगा? अब आनेवाले कर्म पर विजय पाने के लिए सरल उपाय होने की तरह, प्रस्तुत कर्म को अनुभव से मुक्त होने का क्या कोई उपाय है?

उ ;– प्रस्तुत कर्म को निकाल कर अनुभव से मुक्त होने के लिए परमात्मा ने एक उपाय बताया है। उस विधान के अलावा धरती पर कर्म से मुक्त होने का मार्ग है ही नहीं। इस कारण अर्जित कर्म को अनुभव करना अनिवार्य हो जाता है। सम्पूर्ण दैवज्ञान को जाननेवाला, कर्म पर विजय पाना जानता है। कर्म पर विजय पाकर, उसके अनुभव से मुक्त होने के लिए, परमात्मा ने गीता में एक श्लोक में कहा। ज्ञान योग 37 वाँ श्लोक**......**

श्लोक ;- यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन ।
ज्ञानाग्नि सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तधा।।

भावार्थ ;- "अग्नि काष्ठ के समूह को जिस प्रकार से भस्मरुप कर देता है, वैसे ही ज्ञानरुप अग्नि सब कर्मों को भस्मरुप कर देता है" श्री कृष्ण ने कहा। इसलिए जो कोई भी परमार्थ ज्ञान को जान लेता हो, वह प्रस्तुत कर्म को रहित कर, अनुभव से स्वयं को मुक्त कर लेता है। परमार्थ ज्ञान को जाननेवाले में ज्ञान अग्नि की भाँति प्रज्वलित होकर कर्मों को भस्मरुप कर देता है। इसके अलावा अन्य कोई मार्ग नहीं है। जिस व्यक्ति ने भी पाप कार्य किया हो, यदि वह व्यक्ति ज्ञान रहित होता हो तो, उसके लिए कर्म को भोगना अनिवार्य है। यही विषय क़ुरआन ग्रंथ में 4 वाँ सूरा111 वाँ आयत में "जो गुनाह कमाए तो उसकी कमाई उसके ऊपर ही पड़ेगी" कहा गया। इस आयत से पता चलता है कि जिसके कर्म को उसी को भोगना पड़ता है। प्रस्तुत कर्म पर विजय पाने के लिए 4 वाँ सूरा106 आयत में "अल्लाह से माफी चाहो बेशक अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है" गत काल में कर्म ग्रंथ में अंकित हुआ कर्मों को रहित करने के लिए सबसे पहले परमार्थ ज्ञान को जानकर परमात्मा से क्षमा माँगे तो सब कर्म क्षमा कर दिए जायेंगे और कर्मचक्र

thraithashakam-36

कर्मों से रहित हो जाएगा। परमात्मा सबका अधिपति, अधिकारी है इसलिए वे चाहें तो पलभर में कर्म रहित कर सकते हैं।

अगर मनुष्य ने प्रपंच संबंधित जो भी अर्जित किया हो तो, परमार्थज्ञान द्वारा भस्मरुप हो जाएगा। अगर दैव दूषण द्वारा प्राप्त पाप हो तो, परमार्थज्ञान द्वारा उसे क्षमा नहीं मिल सकता। इस बारें में 4 वाँ सूरा में 107 वाँ आयत में 'आत्मद्रोह करनेवाले के पक्ष में तुम मत झगड़ों, बेशक अल्लाह नहीं चाहता किसी बड़े दगाबाज गुनाहगार को" कहा गया। इससे पता चलता है कि परमात्मा के प्रति पाप को क्षमा नहीं मिलता है, भस्मरुप भी नहीं होता है। बायबिल ग्रंथ में मत्ती सूसमाचार 12 वाँ अध्याय 32 वाक्य में "जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, उसका पाप यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कहेगा, उसका अपराध न तो इस युग में, न ही आनेवाले युग में क्षमा किया जाएगा" कहा गया। इन सब पर गौर करने से पता चलता है कि प्रपंच संबंधित विषयों को ज्ञान के द्वारा क्षमा मिल सकता है, परन्तु परमात्मा के प्रति किया गया पाप को क्षमा नहीं मिल सकता। कर्म एक ग्रंथ के रुप में आंकित किया गया। उस ग्रंथ में अनेकों पत्र होते हैं, यदि उसे देखें तो 324 होंगे। और पाठ 36 हैं। इतना ही नहीं बल्कि कर्म ग्रंथ तीन अध्यायों में है। कर्म ग्रंथ का विवरण जानने वाला कोई भी कर्म पर विजय पा सकता है। कर्म, मर्म तथा भयंकर होता है। ऐसे कर्म को केवल भाव द्वारा अर्जित किया जान सकता है, या रहित किया जा सकता है। यदि कर्म पर विजय पाना जान सकें तो, बड़ी सरलता से कर्म पर विजय पाया जा सकता है। बस इतना ही है कर्म का रहस्य।

समाप्त

thraithashakam-36

किसी विषय को समर्थन करने के लिए शास्त्र की जितनी आवश्यकता होती है,वैसे ही

किसी विषय को खंडन करने के लिए शास्त्र की उतनी ही आवश्यकता होती है।

*****

असत्य को हजार लोग कहें वह सत्य नहीं होगा,
सत्य को हजार लोग नकारें वह असत्य नहीं होगा

आपका

इन्दू धर्म प्रदाता
संचलननात्मक रचयिता, त्रैत सिद्धान्त आदिकर्ता
श्री, श्री, श्री आचार्य प्रबोधानन्द योगिश्वर जी

thraithashakam-36